

धृति क्षमा दमोस्तेयं शौचं इन्द्रियनिग्रहः ।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम् ॥

Regd. No. 58414/94

स्वामी रामानन्द जी द्वारा संचालित
हमारी साधना

त्रैमासिक

वर्ष 32 • अंक 4 • अक्तूबर-दिसम्बर 2025

मूल्य रु. 25/-



श्रीगुरु पद नख मनि गन जोती । सुमिरत दिव्य दृष्टि हियँ होती ॥



करुणामयी सुमित्रा माँ

हमारी साधना

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।
 सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत् ॥
 न त्वहं कामये राज्यम्, न स्वर्गं नापुनर्भवम्।
 कामये दुःखतप्तानां, प्राणिनामार्ति नाशनम् ॥

वर्ष : 32

अक्तूबर-दिसम्बर 2025

अंक : 4

भजन

प्रभु पद छांड़ि न कहुं सुख पायो ।
 जदपि करे सब करम जनम भरि निसिदिन चहुंदिसि धायों ।
 नेकु न झलक लखी सुख की कहुं कर मलि मलि पछितायों ॥
 भयो निरास आस सब टूटी अपने मुंह की खायों ।
 तब झष मारि हारि हिय में हौं हरि की सरन सिधायों ॥
 स्वारथ सने भाव सों जस तस कछु चरनन चित लायों ।
 सकल अनट अवखे मिटे उर आनंद सिन्धु समायो ॥
 अस उदारता निरखि नाथ की मन में बहुत लजायों ।
 रामसरन फँसि झूँटे जग में अबलौं समय नसायो ॥

भजन संख्या 15

- स्व. श्री सूर्यप्रसाद शुक्ल जी 'रामसरन'

प्रकाशक

साधना परिवार

स्वामी रामानन्द साधना धाम,
 संन्यास रोड, कनखल,
 हरिद्वार-249408
 फोन: 01334-311821
 मोबाइल: 08273494285

सम्पादिका

श्रीमती रमना सेखड़ी

995, शिवाजी स्ट्रीट,
 आर्य समाज रोड
 करोल बाग,
 नई दिल्ली-110005
 मोबाइल: 09711499298

उप-सम्पादक

श्री रमेश चन्द्र गुप्त 'विनीत'

1018, महागुन मैशन-1,
 इन्दिरापुरम,
 गाजियाबाद-201014
 ई-मेल: rcgupta1018@gmail.com
 मोबाइल: 09818385001

विषय सूची

क्र.सं. विषय	रचयिता	पृ.सं.
1. चित्र – करुणामयी सुमित्रा माँ		2
2. भजन	स्व. श्री सूर्यप्रसाद शुक्ल जी 'रामसरन'	3
3. सम्पादकीय		5
4. भजन – गुरु वन्दना	कान्ति सिंह	6
5. भजन – गुरु कृपा	कान्ति सिंह	6
6. भजन – तुम * गगन	स्व. श्री विजयेन्द्र पाल भण्डारी जी	7
7. भजन – देवता से	श्री नरेन	8
8. भोगों की आशा त्याग कर परम सुहृद् भगवान् की आराधना करें (पद – रत्नाकर 1361)		8
9. भजन – विनती सुनो हे स्वामी	श्रीमती सन्तोश नांगिया	8
10. गीता विमर्श – धारावाहिक	स्वामी रामानन्द जी	9-11
11. गुरु वाणी – धारावाहिक		12
12. Letters to Seekers – धारावाहिक		13-14
13. भागवत के मोती – धारावाहिक		15
14. साधना परिवार की विभूतियाँ – धारावाहिक		16-18
15. कानपुर साधना शिविर-2025 का विवरण तथा प्रवचन सार		19-24
16. बीसलपुर साधना शिविर-2025 का विवरण तथा प्रवचन सार		25-31
17. जीवन का कर्तव्य	श्रद्धेय स्वामी श्रीरामसुखदासजी महाराज	31
18. गुरुदेव! तेरी ओट	परम आदरणीय सुमित्रा माँ	32
19. चिन्तन	रमेश चन्द्र गुप्त 'विनीत'	33-34
20. गुरु की दिव्य ज्योति से जगमगा उठता है शिष्य	संकलन – पी.बी. श्रीवास्तव	35
21. व्यस्त दुनिया में बच्चों और युवाओं के लिये साधना की शक्ति	तोष अग्रवाल	36-37
22. दानदाताओं की सूची		38-39
23. भीड में भी मन को शान्त रखने वाला सच्चा तपस्वी – श्री श्री आनन्दमूर्ति (प्रस्तुति: दिव्यचेतनानन्द अवधूत)		39
24. शोक समाचार		40
25. श्री स्वामी रामानन्द जी साधना साहित्य		41
26. आगामी कार्यक्रमों की सूचना		42
27. शोक सन्देश		43
28. पूज्य गुरुदेव का जन्म दिवस समारोह एवं शिविर – निमन्त्रण		44

सम्पादकीय

सम्पादक मण्डल का सभी सुधी पाठकों को प्रेम भरा अभिनन्दन।

आदिगुरु शंकराचार्य जी का कथन है –

विदेशेषु मान्यः स्वदेशेषु धन्यः सदाचारवृत्तेषु मत्तो न चान्यः।

मनश्चेन्न लग्नं गुरोरङ्घ्रिपदमे ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम्॥

अर्थात् देश-विदेश में सम्मान मिलता हो, अपने देश में जिनका नित्य जय-जयकार से स्वागत किया जाता हो और जो सदाचार पालन में भी अनन्य स्थान रखता हो, यदि उसका भी मन गुरु के श्रीचरणों के प्रति आसक्त न हो तो इन सद्गुणों का कोई महत्व नहीं होता है।

सच ही तो है। सद्गुरु की कृपा के बिना ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता। गुरु के प्रति सच्ची निष्ठा और गुरु की आज्ञा का पालन दोनों ही आवश्यक हैं। सद्गुरु ही अपने शिष्य को ठोक-पीटकर इंसान बनाता है। जब तक सद्गुरु का हाथ सिर पर है तब तक शिष्य स्वयं को सुरक्षित समझ सकता है। सद्गुरु के अमृत वचन साधक को कुविचारों और षटविकारों से सदा बचाते रहते हैं। हमारे सद्गुरु बेशक स्थूल रूप में हमारे बीच में नहीं हैं, किन्तु उनका साहित्य तो उनके रूप में विद्यमान है ही। हमें उनके साहित्य का सतत् अध्ययन करते रहना चाहिए – विशेषकर पत्र-पीयूष और गीता-विमर्श का।

गत तिमाही में हमने एक उच्च कोटि के साधक श्री पुरन्दर तिवारी जी को खो दिया था। दुर्भाग्य ने अभी भी हमारा पीछा नहीं छोड़ा और इस तिमाही में भी काल के क्रूर हाथों ने हमारे एक अति वरिष्ठ साधक श्री विजयेन्द्र भण्डारी जी को हमारे बीच से उठा लिया। श्री विजयेन्द्र जी न केवल हमारे पूज्य गुरुदेव महाराज के भतीजे थे वरन साधना परिवार के प्राण भी थे। उन्होंने लगातार कई वर्षों तक साधना परिवार में सचिव के रूप में अपनी सेवा दी और अपने कर्तव्य को बखूबी निबाहा। श्री विजयेन्द्र जी बहुत ही सौम्य रूप और शान्त स्वभाव के व्यक्ति थे। इस पत्रिका में 'साधना परिवार की विभूतियाँ' नामक स्तम्भ में उनके व्यक्तित्व को प्रकाशित किया जा रहा है।

इस तिमाही में दो शिविरों का आयोजन किया गया – एक कानपुर में और दूसरा बीसलपुर में। दोनों के विवरण इस अंक में देखे जा सकते हैं। इसके अतिरिक्त भजन, साधकों के लेख, पुरानी पत्रिकाओं से उद्धृत लेख, 'कल्याण', 'राम-सन्देश' जैसी पत्रिकाओं से उद्धृत लेख तथा धारावाहिक लेख भी पत्रिका में सम्मिलित किये गये हैं।

पाठकों से निवेदन है कि पत्रिका की समीक्षा, मौलिक लेख एवं सुधार के लिये अपने मूल्यवान सुझाव सम्पादक अथवा मुख्य सम्पादक को अवश्य प्रेषित करें।

आगामी वर्ष 2026 के लिये सभी पाठकों को सम्पादक मण्डल की शुभकामनायें।

गुरु वन्दना

प्रभुजी हम आये शरण तिहारी
गुरुजी हम आये शरण तिहारी ।
पाप-पुण्य कछू नहिं जानूं पड़ी हूँ द्वार तिहारी ।
प्रभुजी हम आये शरण तिहारी ॥
भली बुरी जैसी हूँ स्वामी चरणों में शीश झुकाऊँ ।
प्रभुजी हम आये शरण तिहारी ॥
तेरी दया कृपा से भगवन् निज अज्ञान मिटाऊँ ।
प्रभुजी हम आये शरण तिहारी ॥
शरण पड़े की लज्जा राखो नित नित शीश झुकाऊँ ।
प्रभुजी हम आये शरण तिहारी ॥
गुरुजी हम आये शरण तिहारी ॥



गुरु कृपा

तेरी कृपा को पाकर मैं धन्य हो गया ।
चरणों में तेरे आकर मैं धन्य हो गया ॥
झोली थी मेरी खाली दामन भी था ये खाली ।
गुरु नाम दान पाकर मैं धन्य हो गया ॥
तेरी कृपा को पाकर मैं धन्य हो गया ॥
विषयों में फँस के मैंने जीवन के पल गंवाए ।
गुरु दर्श तेरा पाकर मैं धन्य हो गया ।
तेरी कृपा को पाकर मैं धन्य हो गया ॥

— कान्ति सिंह

देवता से

सुख के स्वप्न कर दिये मेरे सभी साकार तुमने !
भर दिया आंचल दिये कैसे नवल उपहार तुमने !
देवता ! अपना बनाया था लुटा कर प्यार तुमने !
ले लिया था अपने निज हाथों में जीवन भार तुमने !
ऐसे समदर्शी न देखा रूप है क्या, वेश है क्या ?
कोई परिचित है या अनजाना किसी का देश है क्या ?
जो सभी पर था बरसता प्रेम का आवेश है क्या !
तेरा जीवन एक दर्शन है मधुर सन्देश है क्या !
जगत देखा है मैंने पर कोई तुम सा नहीं देखा !
खुले दिल से लुटाये प्यार जो ऐसा नहीं देखा !
स्वार्थ से रहित मैंने कोई अपना नहीं देखा !
कहीं सन्तों में भी अब तक है तुम जैसा नहीं देखा !
विचारों का जगत तुमने सितारों से लिया होगा !
समझता हूँ तुम्हें मानस यह सागर ने दिया होगा !
लगन से तुमने तप ऐसा हिमालय पर किया होगा !
मिला जो देवताओं को वही अमृत पिया होगा !
मिटा करती थी पथ की सब थकान दर्शन से ही तेरे !
निराशा में प्रभु ! आशा का तुम सन्देश देते थे !
रवि किरणों सा बन कर तुम अंधेरे को मिटाते थे !
खिचे आते थे कितने पास आकर्षण से ही तेरे !
पड़ी सूनी हुई पतझड़ से है अब तो भरी महफल !
गया साकी जो देता था प्याला प्यार का छल छल !
अनूठा था जगत भर से तुम्हारे नेह का आंचल !
निराली शान्ति थी मन को कर देती थी जो निश्चल !

— श्री नरेन

तुम • गगन

तुम कहाँ हो
 गगन में हो या कि फिर धरा पर हो ?
 गगन तुम्हारी मुठ्ठी में है
 या तुम गगन की गोद में ?
 तुम उसे लख सकते हो
 पर तुम उसे पकड़ सकते नहीं ।
 क्योंकि गगन तो है ही नहीं
 वस्तुतः मात्राभास है ।
 सब जगह सब लक्षितालक्षित हूँ
 तो मात्र मैं ही हूँ;
 अरे प्यारे ! मैं तुम्हीं में हूँ
 वस्तुतः, तुम मुझी में हो ।
 मैं ही सृष्टि का सामर्थ्य हूँ,
 चर भी हूँ, अचर भी हूँ;
 जीव हूँ जन्तु हूँ,
 चेतन भी और जड़ भी मैं ही हूँ;
 गोचर हूँ, अगोचर हूँ
 सीमा भी, सीमा से परे भी !
 स्वयं को मानकर सृष्टि का सिरमौर यदि चले तुम
 अटक जाओगे स्वयं तक
 भटकते-घूमते रह जाओगे
 यदि प्रेम मुझसे करोगे, मुझे पाने की सच्ची राह से
 तो मिलूँगा तुम्हें निश्चय ही
 हर राह में, हर मोड़ पर।
 प्रेम क्या है
 अद्वैत को समर्पण, द्वैत का विसर्जन,
 कर यदि पाए
 सभी में पाओगे निश्चय ही मुझे तुम ।
 मुठ्ठी में तो हरगिज़ मुझे पकड़ नहीं पाओगे प्यारे,
 हो जाऊँगा मैं आह्लाद बनकर हृदय में तुम्हारे ।
 हर वस्तु में, हर जीव में,
 चर-अचर दोनों स्थितिओं में,
 गतिमान मुझको ही पाओगे तुम
 फिर भी सदा स्थिर;
 यही स्थिरता तुम्हें भी कर लेगी सहसा आलिंगनबद्ध
 तब शान्त हो जायेंगे प्रश्न
 सभी के सभी उत्तरित !

— स्व. श्री विजयेन्द्र पाल भण्डारी जी की एक दुर्लभ कृति

Amazing . Beautiful!

Here is the English translation below:

“I”
 Think, ponder before you sway,
 Am “I” in all, or is all within me, I say?
 When I came into this world,
 My mother fed me milk,
 Sisters and brothers cradled me with love so silk.
 Father toiled hard, earning wealth with care,
 All showered love, pushing me forward, fair.
 As I grew, succeeding in my deeds,
 “I” and “mine” spread their web of needs.
 Forgetting the truth, “I” took such a form,
 Perhaps this is the world’s illusion, its charm.
 When golden dreams shattered, all left in the air,
 My mind, distraught, was filled with despair.
 I ran here and there, but nothing could I gain,
 Returned home a fool,
 Found solace in Mother’s embrace again.
 A mother is a mother, her wisdom ever true,
 “Learn from the past, move forward anew.
 Keep striving with fresh efforts, bold and bright,
 Spread the light of hope in every direction’s sight.”
 Inspired by dear Mother’s words, I rose anew,
 A fresh stream of energy within me grew.
 “All deeds are for Him,” she taught me to see,
 Every task I took succeeded effortlessly.
 Says Guru Nanak, “The Creator does it all,
 Be selfless, O man, let sins and sorrows fall.
 Wander this world, renouncing attachment’s tie,
 None is a stranger; the One resides in all, high.”

(English translation of
 Late Shri Vijendra Pal Bhandari’s poem
 by his nephew Mr. Manu Chopra, Canada)

भोगों की आशा त्याग कर परम सुहृद् भगवान् की आराधना करें

भोग अनित्य, अपूर्ण सदा हैं, क्षणभङ्गुर, दुःखों की खान ।
 हैं प्रत्यक्ष देखते, तो भी उन्हें चाहते सुखमय मान ॥
 नित्य मनोरथ नये-नये हम करते, रचते विविध उपाय ।
 मिलते नहीं किंतु मनचाहे, हो रहते निराश, निरुपाय ॥
 मिलते तो फिर अधिक प्राप्त करने की मन में उठती चाह ।
 इसी बीच वे मिले हुए भी चल देते विनाश की राह ॥
 रहता यह विनाश का भय नित, छा जाता विनाश पर शोक ।
 इन असंख्य भय-शोकों से है भरा सदा भोगों का लोक ॥
 'भोगों में सुख है' – यह रहती जब तक मन में छायी भ्रान्ति ।
 तब तक नये-नये दुःख आते, कभी न मिल सकती सुख-शान्ति ॥
 जो हम स्थिर सुख-शान्ति चाहते तो भोगों की आशा त्याग ।
 परम सुहृद् आनन्दरूप प्रभु को ही भजें सहित अनुराग ॥
 समझें एक उन्हीं को 'मेरा' उनके ही हो रहें अनन्य ।
 उनके एक पुष्प आश्रय से जीवन सफल, परम हो धन्य ॥
 यही चरम फल है जीवन का, यही साध्य है एक पुनीत ।
 करें इसी के लिये प्रार्थना प्रभु चरणों में नित्य विनीत ॥

(पद - रत्नाकर 1361)

भजन

विनती सुनो हे स्वामी, मुझको उदार कर दो
 जीवन को मेरे निर्मल, गंगा की धार कर दो
 अवगुण हैं बहुत मुझमें, मैं अधम व पतित हूँ
 केवल कृपा से अपनी, मुझमें सुधार कर दो
 वाणी भी मधुमयी हो, हृदय हो प्रेम पूरण
 मन वासना रहित हो, इसे निर्विकार कर दो
 कण कण में तुझको देखू, हो दिव्य दृष्टि मेरी
 सदा सत्य में ही विचरूँ, पावन व्यवहार कर दो
 विषयों से दूर कर दो, सन्तों का संग दे दो
 चरणों का प्रेम दे कर, मस्ती का नूर भर दो
 द्वन्द्वों से होऊँ ऊपर, हृदय में शक्ति जागे
 हे सोम सौम्यता से, मेरा शृंगार कर दो
 सुन लो पुकार मेरी, दीनों की सुनने वाले
 अपना बना के मुझको, मेरा उद्धार कर दो
 - श्रीमती सन्तोश नांगिया

गीता विमर्श

अध्याय 6

(गतांक से आगे)

संकल्पप्रभवान्कामास्त्यक्त्वा सर्वानशेषतः ।
मनसैवेन्द्रियग्रामं विनियम्य समन्ततः ॥24॥
शनैः शनैरुपरमेद्बुद्ध्या धृतिगृहीतया ।
आत्मसंस्थं मनः कृत्वा न किञ्चिदपि चिन्तयेत् ॥25॥

‘संकल्प से जगने वाली सभी कामनाओं का पूरी तरह से त्याग करके, मन से ही इन्द्रियों के समूह को सब ओर से भली प्रकार से रोककर, धैर्य से सम्भाली हुई बुद्धि के द्वारा धीरे-धीरे उपराम होता जाये। मन को आत्मा में टिकाकर कुछ न सोचे’ ॥24-25॥

आसन पर बैठकर साधन करे। सभी कामनाओं का पूरी तरह से त्याग करे। कामनायें मनको चञ्चल कर देती हैं। मुझे अभी उठकर यह काम करने हैं, ऐसा विचार काफी परेशानी का कारण हो जाता है। बड़ी कामनायें कितना परेशानी का कारण होती हैं इसका अनुमान कठिन नहीं। धन कमाना है, बेटी ब्याहने को है। चुनाव लड़ना है, यश कमाना है, व्यापार से पैसा पैदा होना चाहिए, आदि-आदि कामनाओं की परम्परा का अन्त नहीं। व्यक्ति को उन सभी को छोड़ना होगा। पूरी तरह से छोड़ना होगा।

जो हमारे लौकिक कर्तव्य हैं उनसे सम्बन्ध रखने वाली कामनायें भी छोड़नी होंगी क्या? यदि इस योग में सिद्धि चाहिए तो छोड़नी ही होंगी। जब तक चाह है तब तक अटक है। इसी बात को समझते हुये समझदार लोग संन्यासमार्ग में झट से प्रवेश नहीं देते हैं। कई कर्तव्य तो पूरे होकर ही छूट सकते हैं। जिसने गृहस्थ किया है उसे अपने कर्तव्य की प्रतीति होनी स्वाभाविक है। उस प्रतीति से – उस बन्धन से – व्यक्ति कर्तव्य-भावना के लुप्त हो जाने से ही मुक्त हो सकता है। ‘वाचा वेदान्ती’ कर्तव्य-भावना को लुप्त करने का उपाय कहते हैं – ‘ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या’ ब्रह्म सत्य है और जगत् मिथ्या है। कौन

किसका है? कैसा कर्तव्य? यह सभी माया है, छोड़ो। ऐसा चिन्तन संस्कार के बन्धन को काटता नहीं। वह बन्धन आ घेरता है। अधिकाधिक कुछ समय के लिये दबाया जा सकता है। यदि व्यक्ति संस्कार के क्षीण होने के लिये रास्ता नहीं देता तो वह भी उसे आगे बढ़ने के लिये रास्ता नहीं देता। अग्रगति असम्भव होती है। इसीलिये तो संन्यास लेने के लिये पुत्रोत्पत्ति का नियम था। उतने से संयुक्त परिवार में पत्नी का निर्वाह हो सकता था। और उसके लिये भविष्य के लिये अवलम्बन भी हो जाता था। बाद में चला वह नियम जो बाह्य त्याग को परमोच्च समझकर उसका बिना रोक-टोक के निर्देश करता था – ‘यदहः विरजेत् तदहः प्रव्रजेत्’ ‘जिस दिन वैराग्य हो, उस दिन घर छोड़ दो’।

तो कैसे हो सकता है कामना का परित्याग? कामनाओं की पूर्ति तो जीवन को खा जाएगी। छोड़कर भागने से भी तो छूटता नहीं है बन्धन। जो कर्तव्याश्रित कर्म नहीं हैं उनका परित्याग करना होगा विवेक के द्वारा। ‘कामना दुःख की जननी है, चञ्चलता की माँ है, परेशानी का घर है, अज्ञान की पुत्री है।’ कर्तव्यों के पालन के लिये कर्मयोगी की भाँति यत्न करना होगा। आखिर प्रयत्न तो किया जा सकता है, कर्म की विशाल गति को समझते हुए। फिर चञ्चलता नहीं होती। समय आने पर व्यक्ति उससे भी मुक्त होता है। पर यह न भूलना होगा कि बिना कामनाओं के परित्याग के चैन नहीं, मन की स्थिरता नहीं।

सभी कामनाओं का पूरा-पूरा त्याग होना चाहिए। भली कामना, कर्तव्याश्रित कामना, धर्माश्रित कामना – किसी के लिये भी गुंजाइश नहीं। सुप्त चेतना में भी जब तक कामनाओं का निवास है तब तक चैन नहीं। विवेक से त्याग हो पाता है। धैर्य चाहिए। भक्त

का रास्ता अलग, उसका त्याग अलग और उसका दृष्टिकोण भी अलग होता है, यह न भूलियेगा। यह सभी कुछ योगियों के लिये कहा गया है।

संकल्पप्रभवान्कामान् – संकल्प से जगने वाली कामनायें। मन की तरंगें संकल्प हैं। संस्कारों के कारण वह तरंगें उठती हैं और वही मनोगत राग-द्वेष का आश्रय पाकर कामना का रूप धारण कर लेती हैं। मन तो संकल्प विकल्पात्मक ही है। तरंगें उससे निकला ही करती हैं।

साधन में बैठने पर जो-जो कामना मन में जगे इसका निराकरण करता जाये बुद्धि के द्वारा। इससे मन धीरे-धीरे निश्चल होगा।

और, इन्द्रियों के समूह को चारों ओर से भली प्रकार से रोके। कैसे रोके? मन से ही रोके। स्थूल-जगत् की ओर आकृष्ट होने न दे। मन तो इन्द्रियों का स्वामी है, अतः रोक सकता है। आँख खोलने को मन होता है, न खोले। कान सुनना चाहता है, उसे उधर से हटा दे।

वस्तुस्थिति है कि इन्द्रिय तथा विषय का संयोग होने पर भी मन का इन्द्रिय से योग न होने पर विषय की प्रतीति नहीं होती। कानों में शब्द पड़ने पर भी मन कहीं और लगा हो तो वह सुनाई नहीं पड़ते। आँखें खुली होने पर भी वैसी हालत में दीखता नहीं। हाथ कट जाने पर भी पता नहीं चलता। अतः इन्द्रियों को रोकने का सुगम उपाय है मन को अन्यत्र भली प्रकार से लगा देना। इन्द्रियाँ स्वतः रुकी रहेंगी। बाहर से इन्द्रियों को रोकने की अपेक्षा, यह सुगम उपाय है। परन्तु, यह हर समय सफल नहीं होता। जहाँ यह सफल नहीं होता उस हालत में रोक-थाम करनी होगी।

यहाँ मन का अर्थ विवेचनात्मक मन है। जो विवेक करती है वह बुद्धि ही मन है।

धीरे-धीरे पीछे हटते जाना है। अन्तर्मुख होते जाना होगा। स्थूल स्तर से सूक्ष्म में, सूक्ष्म से कारण में और फिर कारण को भी लाँघकर आत्मा में स्थिर होना होगा। अंग्रेजी में इसे 'विद्दाल' कहते हैं – चेतना का कोषों के क्रम से पीछे हटते जाना। यदि हम बुद्धि

तथा मन की गतियों का निराकरण करते जाते हैं, तो धीरे-धीरे हम गहरे में पहुँचते जाते हैं। जैसे पानी में फेंका पत्थर नीचे जाता है, जैसे पानी में रेत बैठ जाता है पानी के टिकते ही। यह भी वैसे ही होता है।

इसका उपाय संकल्प विकल्पों को जोर से दबाना नहीं, अपने को ढीला छोड़ना है। जगने वाले संकल्पों को विवेक की आँखों से देखते जाना है। वह स्वतः ही निराकृत होते जायेंगे। ऐसा करने से उनका प्रादुर्भाव कम होता जायेगा।

धीरे-धीरे उपराम करे। जल्दी ही पीछे हटना हो नहीं सकता। जितना जल्दी करना चाहेगा उतनी ही देरी लगेगी। उसकी उत्सुकता ही उसे चञ्चल कर देगी। जैसे हाथी आराम से बैठता है, ऐसे ही आराम से मन बैठा करता है। अतः, शीघ्रता से कुछ पा जाने की न सोचे। इस विषय में विशेष प्रयत्न फलदायक नहीं। उसके प्रति समझ आवश्यक है।

'धैर्य से सम्भाली हुई बुद्धि के द्वारा'। उपराम बुद्धि के द्वारा होगा। विवेक ही प्रधान है उपराम में। यह उपराम में ऊपर कहा ही है। परन्तु बुद्धि अधीर न हो उठे। अधीर हो जायेगी तो दबाने की चेष्टा करेगी वृत्तियों को। यदि दबाव होगा, तो तनाव होगा। तनाव होगा तो उपरामता समाप्त हो जायेगी। धैर्य से विवेक को जागृत रखना है। विवेक के प्रकाश में नये-नये चञ्चलता के साधन पैदा नहीं होते। नई वासनायें नहीं जगतीं। पुरानी जल्दी क्षीण होती जाती हैं। अतः, संस्कार के क्षीण होने से मन की निश्चलता होना स्वाभाविक ही है।

जब साधना आरम्भ की जाती है तो आँधी आती है। जो कुछ भीतर होता है सभी उमड़ने लगता है। इस नये मार्ग को पाकर आकस्मिक उभाड़ से कई परेशान हो जाते हैं। धैर्य की उस समय अत्यधिक आवश्यकता होती है। यह पहली घाटी है। फिर आगे रास्ता साफ होता है। चलते-चलते फिर कभी बली संस्कार अटक जाता है। फिर अधीर होने की सम्भावना होती है। परन्तु यदि साधना के तरीके पर

विश्वास है, समझ है और सच्ची अभीप्सा है तो घबराहट होगी ही नहीं। जितना हम ना-समझ और अविश्वासी होते हैं, उतनी ही अधीरता होती है।

‘मन को आत्मा में टिकाकर कुछ न सोचे।’ यह जो पीछे हटना है, इसमें घनात्मक लक्ष्य भी कोई होना चाहिए या कोरा पीछे हटना ही है? आत्म-चिन्तन का एक निश्चित लक्ष्य रहता है। आत्मा कैसा है? मैं आत्मा हूँ, मैं ऐसा हूँ, आदि कई प्रकार की आत्म-चिन्तन की प्रक्रियायें (शैलियाँ) हैं। आत्म-चिन्तन जागृत रखें, आवश्यकता होने पर विवेक से संकल्प-विकल्पों का निराकरण करें। अन्त में विवेक भी स्वतः समाप्त हो जायेगा। मन में आत्माकार वृत्ति ही रह जाये, ऐसा प्रयत्न करें। इस अवस्था में स्थित रहने की चेष्टा करें।

ऐसी चेष्टा करने में क्या होगा?

यतो यतो निश्चरति मनश्चञ्चलमस्थिरम्।

ततस्ततो नियम्यैतदात्मन्येव वशं नयेत् ॥26॥

‘जहाँ-जहाँ से यह चञ्चल अस्थिर मन भाग निकले, वहाँ-वहाँ से रोककर इसे आत्मा के वश में ले आये’ ॥26॥

यह मन चञ्चल है और अस्थिर है। चञ्चलता इसका घनात्मक गुण है। इसमें वायु की सी तरलता है। अतः, यह अस्थिर है, इसका टिकना मुश्किल है। जब इस प्रकार से इसे आत्मस्थ करने की चेष्टा होगी तो यह भागेगा। जैसे बच्चे के लिये एक जगह बैठना कठिन होता है, ऐसे ही मन का भी एक जगह लगे रहना कठिन होता है।

इसे पकड़ कर लौटा लाना होगा। समझा बुझाकर लाना होगा। जागरूकता मन को खींचती है। यह भाग गया है, इस बात का भान होते ही वह चंचलता दूर होती है। इस प्रकार से यह भीतर एक आँख-मिचौनी का खेल हो जाता है। बहुत धैर्य से लगे रहना होगा। मन की हार होगी। अन्त में उसकी स्वाभाविक चञ्चलता मिट जायेगी। वह हार कर, थक कर बैठ जायेगा। जिधर लगाया जायेगा लग जायेगा। यह काम कई वर्षों का है। किसी के तो जन्मान्तर लग सकते

हैं। यह मन की प्रकृति का परिवर्तन है। यह मन की साधना है। फिर वह आत्मस्थ रहने लगेगा।

अग्नि प्रज्वलित होने पर खूब ज्वालायें आती हैं। क्रमशः ईंधन फुँकता जाता है और आग कम होती जाती है। फिर ईंधन के साथ ही अग्नि टंडी हो जाती है। इसी प्रकार से आन्तरिक विकारों के क्षय के साथ-साथ मन भी शान्त होता जाता है। वही शान्ति वास्तव में स्थायी शान्ति होती है। जो केवलमात्र अभ्यास पर आश्रित है वह जल्दी ही चली जाती है और उसका प्रभाव भी दूरगामी नहीं होता। विकारों की शान्ति के साथ जो मन की चञ्चलता का अभाव होता है, वह तो हर समय ही बना रहता है। वह प्रयास का परिणाम नहीं, वह सहज होता है। वह बहुत कीमती है। अभ्यास भी आवश्यक है, इसमें सन्देह नहीं, परन्तु उस अन्तर-शोधन के बिना अभ्यास तो खेल मालूम पड़ता है। अभ्यास अन्तःशोधन में सहायक हो सकता है, यदि उसके लिये उसे किया जाये तो।

यहाँ पर एक सिंहावलोकन आवश्यक हो जाता है। भगवान् ने 14वें श्लोक के अपरार्ध में तो कहा था – ‘मनः संयम्य मच्चित्तो युक्त आसीत मत्परः’ अर्थात् ‘मन का संयम करके मेरे में चित्त लगाकर मत्पर हुआ साधनशील बन जाए’। यहाँ ‘आत्मसंस्थं मनः कृत्वा’ अर्थात् ‘मन को आत्मा में स्थिर करके’ ऐसा कहते हैं। ध्यान की कई परिपाटियाँ हैं। भक्तों के लिये तो प्रभु का चिन्तन ही सहज है। ज्ञानियों के लिये आत्मचिन्तन ही केवलमात्र अवलम्बन है। दोनों ही कह दिये हैं। उसमें तो नासिकाग्र दृष्टि का अभ्यास था, इसमें वह नहीं है। दोनों को मिलाना न होगा। इन्हीं बातों को देखते हुए यह चेतावनी दी गई थी कि ध्यान का मार्ग तो देहधारी गुरु से ही प्राप्त करना उचित है। पुस्तकों के आधार पर व्यक्ति उलझ जाता है। देहधारी गुरु का स्पर्श भी तो व्यक्ति को जागृत कर सकता है अस्तु!

ऐसी साधना करने वाले की आगे क्या अवस्था होती है?

(क्रमशः)

गुरु वाणी

भजन में मैं नाम को अधिक महत्व देता हूँ बनिस्पत लीलाओं के चिन्तन के। (पत्र 84)



जाप में श्वास-प्रश्वास को बदलने की चेष्टा नहीं करनी। नाम के साथ जोड़ने का भी प्रयत्न नहीं करना। नाम की धारा को चलने दें और उधर श्वास-प्रश्वास के ध्यान का भी जल्दी ही अतिक्रमण कर जायेंगे। नाम में गायब हो जायेंगे। आने वाले संकल्प विकल्पों की परवाह मत कीजियेगा। अपने मन तथा तन को शिथिल रखियेगा। वह धीरे धीरे शान्त होते चले जायेंगे। धैर्य से सभी समस्यायें अवश्य सुलझ जायेंगी। (पत्र 84)



शान्ति तथा अशान्ति का फेर साधना क्रम में एक अवस्था तक चलता ही है। जैसे साधक समर्पण का पाठ पढ़ता चला जाता है, जैसे-जैसे प्रभु के वरद स्पर्श की प्रतीति सतत उसकी संगिनी होती चली जाती है, अशान्ति की घड़ियाँ पतली पड़ती चली जाती हैं और फिर लुप्त भी होती चली जाती हैं। अनन्य विश्वास का, अटूट निर्भरता का, तथा परम धैर्य का खेल है। भगवान् के सान्निध्य को प्रतीत करना अनिवार्य है। इसी से भगवत कृपा का प्रवाह हम पर प्रेरित होने लगता है अधिकाधिक वेग से, और हम सदैव के लिये कृतकृत्य होते चले जाते हैं। सजग होकर भीतर की अशान्ति से ऊपर उठ जाना होगा और सामयिक शान्ति से भी। यही साधना का सिद्धान्त है। (पत्र 86)



चिन्ताओं तथा परेशानियों से जब तक आप घबरायेंगी, मन के संकल्प विकल्पों का अवरोध करने का यत्न करेंगी, वह आपके लिये बाधा उपस्थित करेंगे ही। छुट्टी मिलेगी तभी जब आप उनके क्षेत्र से ऊपर उठ जायेंगी, अपने उज्ज्वल भाव में, भगवान् के अन्तरंगित्व में स्थापित हो जायेंगी और उनकी उपेक्षा करेंगी। समय पाकर मन भी अपने स्वभाव को बदल डालेगा। (पत्र 86)



व्यक्ति के भीतर अतुल सामर्थ्य है। वह उसे जानता नहीं, अपने को पहिचानता नहीं, इसीलिये व्याकुल हुआ भटकता है। (पत्र 87)



‘श्री राम’ नाम के प्रसाद से व्यक्ति जगने लगता है, मानो सोता हुआ सिंह जग जाये। इसी से भगवान् का कृपा-प्रसाद प्राप्त होता है। नाम खूब स्मरण कीजियेगा। नाम के स्मरण से, नाम का अनन्य अवलम्बन लेने से भागवती कृपा का – महाशक्ति का प्रवाह व्यक्ति में प्रेरित होने लगता है और शीघ्र ही वह कृतकृत्य हो जाता है। (पत्र 87)



Letters to Seekers

Letter No. 27

: Shri Ram :

14, Barakhamba Road,
New Delhi.

24.01.1945

My dear Sharma Ji,

I have received three letters from you on reaching Delhi, dated the 14th, 21st and 22nd. The last one I got just this morning. It is no doubt that your important letter containing the questionnaire has missed me. Some other letters must also have been lost. It is due partly to the vagaries of the Post Office, partly to my too swift movements in the Punjab and, may be, partly due to the favour of the police Department. My movements are kept under watch and no wonder, if my Dak has also been meddled with. What cannot be cured must be endured most pleasantly. If you find it necessary you may rewrite the questionnaire, but I would rather suggest that the answers must come from within you. If not now, you must have the patience to wait till you are ready to receive them from within. The Reality is as close to you, is as much yours, nay, as much you yourself, as I am. There is only a difference in its manifestation or enfoldment; time will surely make up for it. I do not find any cause for feeling too eager, inquisitive or impatient. We all rest on the bed rock of Reality and are gradually growing into the consciousness of it. Moreover, my experience of Reality need not necessarily be your experience. I am to help you on to grow in your own way and into the fullness of your own experience.

Have you begun to do the manual work I suggested? I strongly feel that you must turn yourself out to the Reality on the physical plane wholeheartedly for some hours a day. You must rather merge yourself into it, forgetful of the other and 'higher' thought. It will be a tonic to the mind and body and will help you in your sadhna and give you a finer balance. Besides the charkha, if you could play with the children, rather amuse yourself with them for an hour or so daily, it will be well. Have some hours apart when you will not think, that is what I am trying to emphasise.

I shall request Shri Swami Ji to send you a message, but to do so depends upon him. I sent the reply to Mr. Bhagwan Das's letter. I am surprised to learn that he never got it.

I am pleased to learn about Munnee's marriage. My best wishes go with her. My best wishes are my blessings. Indeed, 'to bless' is His.

I shall leave Delhi on 27th for Chandausi, Distt. Moradabad, and shall stay there upto the 31st. Spending the 1st of February at Bareilly with Mr. Batra, I shall take Shri Swami ji to

Philibhit on the 2nd, where we shall be probably upto the 8th. My address at Chandausi will be C/o, Mr. L. Misra, Principal, Intermediate College.

Remember me to every one in the family with love. Will you be free from Girish's marriage by 5th of March? I am pleased to learn about the Akhandajapa. You will be receiving a few copies of the Bhakti Prakash soon.

With blessings and love,

Yours in the Lord,

Ramanand



Letter No. 28

: Shri Ram :

Karol Bagh,
New Delhi.

My dear.....,

I duly got your letter a few days back. Hope the storm has quieted down once again. It should not be blind reaction which upsets you. An irritation, merely because another person is not behaving as he should, is meaningless. Understand the situation from your point of view. Know what you should resist and what you should not. About things which you should not resist, you must be very clear. There should be no irritation at all. In family life, freedom is very necessary. The desire to dominate, either in the husband or in the wife, causes a good deal of misery. If you are clear about this, you would genuinely overcome a lot of irritation.

Where resistance is necessary, do resist. But, to lose temper is no effective way of resistance. That indicates the measure of our weakness. Be quiet, composed and determined. Think out the most effective way of letting the other person know that he (or she) is wrong, and he or (she) will have to change. This may take the form of non-cooperation even. But seldom will it need that. It may sometimes need self-denial of some sort to move the other party.

To smoulder within in a feeling of painlessness is bad. Be ready to understand and make the other party understand. Be reasonable but do not be weak. That demoralises.

Yours in the Lord,

Ramanand



भागवत के मोती

अप्रैल 2023 अंक से पत्रिका में श्रीमद्भागवत के चुने हुए सन्देश छपने आरम्भ हुए हैं। इस अंक में प्रस्तुत है इन सन्देशों की ग्यारहवीं कड़ी -

51. योग, तपस्या और संन्यास के द्वारा महर्लोक, जनलोक, तपलोक और सत्यलोक रूप उत्तम गति प्राप्त होती है तथा भक्तियोग से मेरा परम धाम मिलता है।
- भागवत 11.24.14
52. यह सारा जगत् कर्म और उनके संस्कारों से युक्त है। मैं ही काल रूप से कर्मों के अनुसार उनके फल का विधान करता हूँ। इस गुणप्रवाह में पड़कर जीव कभी डूब जाता है और कभी ऊपर आ जाता है - कभी उसकी अधोगति होती है और कभी उसकी पुण्यगति - उच्चगति प्राप्त हो जाती है।
- भागवत 11.24.15
53. जगत् में छोटे-बड़े, मोटे-पतले - जितने भी पदार्थ बनते हैं, सब प्रकृति और पुरुष दोनों के संयोग से ही सिद्ध होते हैं।
- भागवत 11.24.16
54. सत्त्वगुण की वृत्तियाँ हैं - शम, दम, तितिक्षा, विवेक, तप, सत्य, स्मृति, सन्तोष, त्याग, विषयों के प्रति अनिच्छा, श्रद्धा, लज्जा, आत्मरति, दान, विनय और सरलता आदि।
- भागवत 11.25.2
55. रजोगुण की वृत्तियाँ हैं - इच्छा, प्रयत्न, घमण्ड, तृष्णा, ऐंठ या अकड़, देवताओं से धन आदि की याचना, भेदबुद्धि, विषयभोग, युद्धादि के लिये मद्जनित उत्साह, अपने यश में प्रेम, हास्य, पराक्रम और हठपूर्वक उद्योग करना आदि।
- भागवत 11.25.3
56. तमोगुण की वृत्तियाँ हैं - क्रोध, लोभ, मिथ्याभाषण, हिंसा, याचना, पाखण्ड, श्रम, कलह, शोक, मोह, विषाद, दीनता, निद्रा, आशा, भय और अकर्मण्यता आदि।
- भागवत 11.25.4
57. पुरुष हो चाहे स्त्री - जब वह निष्काम होकर अपने नित्य-नैमित्तिक कर्मों द्वारा मेरी आराधना करे, तब उसे सत्त्वगुणी समझना चाहिए।
- भागवत 11.25.10
58. सकाम भाव से अपने कर्मों के द्वारा मेरा भजन-पूजन करने वाला रजोगुणी है और जो अपने शत्रु की मृत्यु आदि के लिये मेरा भजन-पूजन करे, उसे तमोगुणी समझना चाहिए।
- भागवत 11.25.11

साधना परिवार की विभूतियाँ

प्रिय पाठको,

कुछ समय पूर्व आपकी इस पत्रिका ने उपरोक्त शीर्षक नाम से एक धारावाहिक का शुभारम्भ किया था जिसका उद्देश्य था वर्तमान समय के साधकों को ऐसे साधकों से परिचय कराना जो पूर्व में साधना परिवार के स्तम्भ थे, जिससे कि उनका योगदान भूतकाल के गर्भ में दबकर विलुप्त न हो जाये। इस विषय के अन्तर्गत साहू काशीनाथ जी, श्री सूर्य प्रसाद जी शुक्ल तथा उसके बाद डॉ. गणेश शंकर जी 'बन्धु' की जीवनियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं। वर्तमान पत्रिका में प्रस्तुत है एक अन्य अत्यन्त उच्च कोटि के साधक प्रोफेसर विजय भण्डारी जी की जीवनी।

प्रोफेसर विजय भण्डारी जी

(8 दिसम्बर 1937 - 11 अक्टूबर 2025 परमात्मा में विलय)

8 दिसम्बर 1937 को आर्य समाज के सिद्धान्तों से ओतप्रोत, प्रतिष्ठित एवं आदरणीय परिवार में, श्रद्धेय लाला मोहन लाल जी भण्डारी और श्रीमती पद्मावती जी के घर एक पुत्र का जन्म हुआ - यह थे प्रोफेसर विजय भण्डारी जी। यह वही परिवार था जहाँ श्रद्धा, अनुशासन और सेवा जीवन का आधार थे। उनके दादा, श्रद्धेय लाला साईं दास जी भण्डारी - जिन्हें सब स्नेहपूर्वक बाबूजी कहते थे - अमृतसर जिले के पहले होम्योपैथ थे।

बाबूजी ने अपने छोटे से पोते का नाम रखा विजेन्द्र पाल, पर प्यार से उन्हें विजय कहकर पुकारा। बचपन से ही विजय सबके लाडले थे - शान्त, जिज्ञासु और विनम्र। उनका पालन-पोषण ऐसे घर में हुआ जहाँ नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों की गूँज थी - वही गोद जिसने कभी पूज्य स्वामी जी को भी झुलाया था।

शिक्षा और प्रारम्भिक जीवन

विजय जी ने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा डी.ए.वी. स्कूल, कृष्णा नगर, लाहौर से आरम्भ की। सन् 1953 में उन्होंने एस.डी.ए.एस. स्कूल, जालन्धर से मैट्रिक पास किया और उत्तर भारत में आर्य समाज

द्वारा आयोजित धर्म शिक्षा परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया। सन् 1957 में डी.ए.वी. कॉलेज, जालन्धर से स्नातक की उपाधि प्राप्त की और संस्कृत विषय में प्रथम आने पर उन्हें रजत पदक से सम्मानित किया गया। बाद में उन्होंने यह पदक चीन आक्रमण के समय राष्ट्रीय रक्षा कोष में दान कर दिया जो उनके देशप्रेम और निःस्वार्थ भावना का सुन्दर उदाहरण था।

सन् 1959 में पंजाब विश्वविद्यालय, होशियारपुर से अंग्रेजी में एम.ए. की उपाधि प्राप्त करने के बाद, उन्होंने अपने चाचा श्री जुगल किशोर भण्डारी जी के मार्गदर्शन में कुछ समय व्यापार सीखा, परन्तु यह उनके शान्त और चिन्तनशील स्वभाव से मेल नहीं खाता था। शीघ्र ही उन्होंने अपने दादा-पिता की परम्परा अपनाई और होम्योपैथी का अभ्यास आरम्भ किया।

सेवा और शिक्षण का जीवन

विजय जी के लिये होम्योपैथी कोई व्यवसाय नहीं, बल्कि सेवा का माध्यम थी। वे हर व्यक्ति की पीड़ा को अपनी मानते थे। उनका दरवाजा हमेशा सबके लिये खुला रहता - चाहे पड़ोसी हों, विद्यार्थी हों या सहकर्मी - सब उन्हें प्रेम से डॉक्टर साहिब कहकर पुकारते थे।

सन् 1968 में उनका विवाह श्रीमती स्वतन्त्र भण्डारी जी से हुआ, जो न केवल उनकी जीवनसंगिनी रहीं बल्कि उनकी प्रेरणा भी बनीं। उनकी पत्नी के बी.एड. करने से प्रेरित होकर विजय जी ने भी बी.एड. की शिक्षा ग्रहण की और इसी बीच होम्योपैथी का अभ्यास जारी रखा। शीघ्र ही उन्हें डी.ए.वी. कॉलेज, अमृतसर के प्राचार्य श्री सी.एल. अरोड़ा जी ने उनकी योग्यता के आधार पर अंग्रेजी का प्राध्यापक नियुक्त कर लिया जहाँ उन्होंने अपने ज्ञान, अनुशासन और स्नेह से विद्यार्थियों के हृदय जीत लिये। जब उन्होंने परास्नातक कक्षाओं को पढ़ाना प्रारम्भ किया तो उनके नोट्स इतने मूल्यवान होते थे कि कोई भी विद्यार्थी उनकी कक्षा छोड़ना नहीं चाहता था।

मानवता और धर्म का पथ

समय के साथ वे केवल शिक्षक नहीं रहे – वे एक मार्गदर्शक, मित्र और दार्शनिक बन गये। वे ज़रूरतमन्द विद्यार्थियों को निःशुल्क पढ़ाते, पढ़ोस के बच्चों को मार्गदर्शन देते और आर्य समाज, लॉरेंस रोड, अमृतसर से दो दशकों तक सक्रिय रूप से जुड़े रहे। उन्होंने आर्य युवक समाज के सचिव और कार्यकारी समिति के सदस्य के रूप में भी सेवा दी। उन्हें क्रिकेट से गहरा लगाव था – न केवल खेलना, बल्कि रेडियो या बी.बी.सी. पर कमेंट्री सुनना भी उन्हें अत्यन्त प्रिय था। 63 वर्ष की आयु में भी वे 16 वर्ष के युवाओं के साथ 1-2 घंटे तक बल्लेबाजी कर सकते थे। वे दिखने में कोमल, पर विचारों में अडिग थे – अन्याय या असत्य सहना उनके स्वभाव में नहीं था।

भक्ति, साधना और समर्पण

सेवानिवृत्ति के बाद उनका जीवन पूर्णतः साधना और स्वामी जी के साहित्य के अध्ययन को समर्पित हो गया। उनका घर पुस्तकों से भरा रहता –

अध्यात्म, अंग्रेजी साहित्य, होम्योपैथी और स्वामी जी के उपदेश। उन्होंने स्वामी जी के ‘पत्र पीयूष’ का अंग्रेजी अनुवाद आरम्भ किया था। 160 पत्रों का अनुवाद करने के बाद यद्यपि तकनीकी कारणों से उनका कार्य मित गया, फिर भी उन्होंने उसे गुरु की इच्छा मानकर सहजता से स्वीकार किया।

अपने जीवन के अन्तिम वर्षों में स्वामी जी महाराज के आशीर्वाद से उन्हें साधना धाम में साधकों को नाम दीक्षा देने का दायित्व प्राप्त हुआ। उन्होंने इस कार्य को गहन श्रद्धा और विनम्रता से निभाया। इससे पूर्व वह कई वर्षों तक साधना धाम हरिद्वार में समय-समय पर जाते रहते थे और महीनों तक वहीं रहकर साधना करते थे। वे अनेक साधकों के लिये एक शान्त प्रकाश बन गये – ऐसा प्रकाश, जो दिखता नहीं, पर जीवन को आलोकित कर देता है। जब कभी भजन गाते थे तो उनका स्वर किसी सधे हुए गायक के गले से निकला हुआ राग लगता था।

साधना परिवार संस्था में आपने लगातार कई वर्षों तक सचिव के पद पर रहकर बखूबी अपने कर्तव्य का निर्वहन किया। सभी बैठकों में उपस्थित रहकर उनका जो विवरण लिखते थे उसकी भाषा व लिखावट, दोनों ही उच्च स्तर की होती थी। बाद में स्वास्थ्य सम्बन्धी विवशता के कारण आप स्वेच्छा से उस पद से निवृत्त हो गये थे।

एक अनुपम प्रेरणा

प्रोफेसर विजय भण्डारी जी ने अत्यन्त सादगी, निष्ठा और धर्ममय जीवन जिया। वे उस कमल की तरह थे जो कीचड़ में खिलता है पर कीचड़ से अछूता रहता है। वे संसार में रहते हुए भी सांसारिकता से परे थे – धर्म, सेवा और नाम जप में लीन।

उनके भतीजे श्री सुधीर कक्कड़ जी के शब्दों में – ‘वे 24 कैरेट के शुद्ध आत्मा थे, आज के समय में दुर्लभ। उन्होंने बाबूजी, भाई साहिब और स्वामी

जी - तीनों के दिव्य गुणों को आत्मसात किया।'

आज जब हम उन्हें स्मरण करते हैं, तो हमारे सामने एक ऐसे व्यक्तित्व की छवि उभरती है जो विद्वान भी थे और विनम्र भी, जो शिक्षक भी थे और साधक भी, जो हर हृदय में अपनी कोमल छाप छोड़ गये।

ईश्वर से हमारी प्रार्थना है कि पूज्य स्वामी जी महाराज उन्हें सद्गति प्रदान करें और उनकी आत्मा को शाश्वत शान्ति मिले।

अन्त में, उनके द्वारा रचित एक भजन की कुछ पंक्तियाँ प्रस्तुत हैं।

हे राम हे राम ऐसो मधुर तेरो नाम
हो जाये धन्य जो ले हृदय में थाम ॥
गाते ही लय हो जाये मेरो मन
छाये हों मानो आनन्द के घन
पलकें भीगें भाव उमड़ते आयें
महिमा तेरी मेरो कण कण गाये ॥ हे राम...
चक्र जगें अपना अपना कीर्तन गायें

ऊपर से नीचे, नीचे से ऊपर बहें
शक्ति की सब सन्तुलित धारायें
समवेत सुरों में तेरा सन्देश सुनायें ॥ हे राम...
काम क्रोध मद लोभ मोह सब
अपने अपनेपन को करें तिरोहित
ऊर्ध्वगमन के सोपान बनते जायें
निर्मल हो जावे जन का तन मन ॥ हे राम...
तुम्हीं प्रगटे दशरथ का बेटा बन
कभी उतर आये कृष्ण कन्हाई बन
हे निराकार तुम्हीं खेलते साकार में
बसे तुम्हीं तो हम सब के अन्तर में ॥ हे राम...

विजय जी के पीछे उनकी पत्नी श्रीमती स्वतन्त्र भण्डारी, पुत्रियाँ विधु ढोडी व प्रिया अरोड़ा, तथा पुत्र अमिताभ भण्डारी रह गये हैं।

(यह लेख विजय जी की बड़ी बहन के पुत्र श्री सुधीर कक्कड़, पत्नी स्वतन्त्र भण्डारी और पुत्री श्रीमती प्रिया अरोड़ा की सहायता से लिखा गया है।)

कई वर्षों से साधन करने पर जो तत्त्व नहीं मिलता, वह सत्संग से तत्काल मिल सकता है।



भगवान् के शरण होने से जो तत्त्व मिलता है, वह अपने उद्योग से नहीं मिलता।



लेने की इच्छा से मनुष्य दास हो जाता है और केवल देने की इच्छा से मालिक हो जाता है।



साधक को यह विचार करना चाहिए कि मुझे वह सुख नहीं लेना है, जो सदा न रहे और जिसके साथ दुःख भी हो।

— श्रद्धेय स्वामी श्रीरामसुखदासजी महाराज

कानपुर साधना शिविर-2025 का विवरण

गुरुदेव की असीम कृपा से विगत वर्षों की भाँति इस वर्ष का शिविर भी उल्लास व आनन्द के साथ दिनांक 11 अक्टूबर 2025 को आरम्भ हुआ और 14 अक्टूबर 2025 को निर्विघ्न सम्पन्न हुआ।

इस शिविर में लगभग 110 साधक-साधिकार्यें सम्मिलित हुए।

शिविर के नियमानुसार रात्रि का जाप, प्रातःकालीन चाय व दलिया के बाद गीता की कक्षा, भोजन व विश्राम के पश्चात् व्यावहारिक साधना की कक्षा, उसके बाद चाय और बहन-भाइयों के संकीर्तन ने शिविर

के आनन्द को दुगना कर आत्मविभोर कर दिया।

इस शिविर में, गुरुदेव की सूक्ष्म उपस्थित में आदरणीय सुशीला जायसवाल जी द्वारा 18 लोगों को नाम प्रदान किया गया।

शिविर के समापन पर विशाल भण्डारा (भोजन प्रसादी) हुआ, जिसमें 650 से अधिक लोगों ने प्रसाद पाया।

इसके लिये हम सभी गुरुदेव भगवान को हृदय से धन्यवाद करते हैं और बार-बार प्रार्थना करते हैं कि सदा ही ऐसी कृपा बनाये रखें।

प्रवचन शार

श्री शिवकुमार जायसवाल जी

गीता के बारहवें अध्याय में भगवान् ने चार योग बताये हैं –

1. समर्पण योग
2. अभ्यास योग
3. भगवत् अर्थ योग
4. कर्म फल त्याग

समर्पण योग – भगवान् कहते हैं – यदि तू मुझ को नहीं मानता तो तू अभ्यास कर और ये सोच कर कर्म कर कि मैं समस्त कर्म भगवान् के लिये कर रहा हूँ।

मय्येव मन आधत्स्व मयि बुद्धिं निवेशय।

निवसिष्यसि मय्येव अत ऊर्ध्वं न संशयः ॥8/12॥

हमें सत्संग के माध्यम से ये पता चलता है भगवान् ही सभी कुछ हैं और हम सभी उन्हीं की सन्तान हैं। पहले भगवान् में हमारा विश्वास होता है और फिर जब विश्वास दृढ़ हो जाता है तो विश्वास श्रद्धा का रूप ले लेता है और हमारी निष्ठा भगवान्

के प्रति गहरी हो जाती है।

कभी हमारा मन बलवान हो जाता है। कभी बुद्धियाँ बलवती होती हैं और कभी इन्द्रियाँ बलवान हो जाती हैं और मनमानी करने लगती हैं। लेकिन जब हमारा समर्पण भगवान् के प्रति पूरी तरह से हो जाता है तो भगवान् में मन बुद्धि लगाने से मन बुद्धि तो नहीं लगते वरन वह स्वयं लग जाता है।

अभ्यास योग – आगे भगवान् कहते हैं कि यदि तू पूरी तरह से मेरे समर्पण करने के योग्य नहीं है तो तू बार-बार मेरी प्राप्ति के लिये अभ्यास कर इससे

लाली मेरी लाल की जित देखूँ तित लाल।

लाली देखन मैं गयी मैं भी हो गई लाल ॥

भगवत् अर्थ कर्म योग – भगवान् कहते हैं यदि तू समर्पण नहीं कर सकता है और अभ्यास करने में असमर्थ है तो तू समस्त कार्यों को मेरे लिये ही कर, मेरे लिये कर्मों को करता हुआ भी तू सिद्धि को प्राप्त हो जायेगा।

कर्मफल त्याग योग – और फिर भगवान् कहते

हैं कि तेरी मेरे में श्रद्धा नहीं है तो भी यदि तू समस्त कर्मों को निष्काम भाव से करता है; और पूरी निष्ठा और श्रद्धा से करता है तो भी सात्विक भाव से किया हुआ कर्म आसक्ति भाव से रहित होकर किया गया कर्म, भगवान् की प्राप्ति का कारण बन जाता है।

बहन सुमन जायसवाल जी

सर्वकर्माण्यपि सदा कुर्वाणो मद्दयपाश्रयः ।

मत्प्रसादादवाप्नोति शाश्वतं पदमव्ययम् ॥18/56॥

भगवान् ने गीता में बताया है कि जो मेरे आश्रित होकर और भगवान् से युक्त होकर सारे कर्मों को करता है तो भगवान् के सम्मुख होने पर साधक की कमी भगवान् स्वयं दूर कर देते हैं।

भगवान् का भक्त कभी विचलित नहीं होता और वह सभी अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थितियों को भगवान् का मंगलमय विधान समझकर सहज में ही स्वीकार कर लेता है। और उसे समाज में कैसे रहना है कैसे सहना है ये सभी बातें समझ में आने लगती हैं।

इसीलिये सम्पूर्ण कर्तव्य कर्म को करते हुए भी हर समय भगवान् से युक्त होकर कर्म करें और हर समय जागरूक रहें। और अपने समय का सदुपयोग करें तो हमारे अन्दर स्वतः ही सहजता, सरलता और मधुरता आती चली जायेगी।

गुरु जी ने हमारी बाँह पकड़ रखी है और उनका वरद हस्त हमारे सिर पर है। जब हम गुरु जी के बताये हुए मार्ग पर पूरी तरह से अनुसरण करेंगे तो प्रभु के समीप होते चले जायेंगे।

बहन कुसुम सिंह जी

प्रसादे सर्वदुःखानां हानिरस्योपजायते ।

प्रसन्नचेतसो ह्याशु बुद्धिः पर्यवतिष्ठते ॥2/65॥

भगवान् कहते हैं प्रसाद की स्थिति हो जाने पर हमारी बुद्धि स्थिर हो जाती है।

आनन्द प्रसाद का पूर्वरूप है। जिसकी बुद्धि परमात्मा से पूर्ण रूप से युक्त हो जाती है वह हर परिस्थिति को भगवान् से स्वीकार करता है।

पतंजलि योग में चार बातें प्रसन्न रहने के लिये बताई जाती हैं।

पहली है मित्रता – पुण्यवान लोगों के प्रति मित्रता का भाव रखना है और उनसे हमारा द्वेष भाव नहीं होना चाहिए।

दूसरी है करुणा – जो दीन दुखियों के प्रति करुणा का भाव रखता है और यथासम्भव उनकी मदद करता है वह स्वयं भी शान्ति को प्राप्त होता है।

तीसरी है मुदिता – जो अधिक सामर्थ्यवान हैं – बुद्धि में, बल में या आर्थिक रूप से हमसे अधिक हैं उनको देख कर हमारे मन में मुदिता का भाव होना चाहिए।

और चौथी है उपेक्षा – जो अपुण्यवान हैं, तामसी प्रवृत्ति के हैं, उनकी हमें उपेक्षा करनी है, उनसे भी हमें द्वेष नहीं करना है।

ये सभी बातें पातंजलि योग में बतायी गयी हैं लेकिन गुरुदेव भगवान् कहते हैं कि साधना में आगे बढ़ने पर हमें सभी से पावन प्रेम करना है सभी में एक मात्र भगवान् को ही देखना है।

बहन कुसुम माहेश्वरी जी

प्रभु की विशेष कृपा से गुरु की कृपा और सत्संग मिलता है।

गुरुदेव भगवान् ने बताया है कि प्रत्येक व्यक्ति के प्रत्येक कार्य का प्रभाव सभी पर पड़ता है इसीलिये हमारा प्रत्येक कर्म हमारा उठने-बैठने, बोलने आदि से दूसरे से भी प्रभावित होते हैं।

इसीलिये हमें अपने प्रभु पर जीवित विश्वास करना है।

हमें इस बात पर जरूर ध्यान देना चाहिए कि हमारा व्यवहार हमारे कर्म, वचन और इन्द्रियाँ सभी प्रभु प्राप्ति में लग जायें और कार्य के प्रारम्भ में, कार्य के मध्य में और कार्य के अन्त में प्रभु का स्मरण करते रहें और सभी से निष्काम कर्म करें।

प्रभु का सतत् स्मरण करते रहें जहाँ भी रहें जैसे भी रहें हर समय प्रभु की याद को बनाये रखें।

हमें वही कर्म करना है जो हमारे विकास में सहायक हो। हमें हर पल का निरीक्षण करना है कि हमारे प्रत्येक क्षण का सदुपयोग हो और रात में आत्मनिरीक्षण जरूर हो।

हमें हर समय सेवा के अवसर को तलाशना है कि हम कहाँ और कैसे किसी के लिये उपयोगी हो सकते हैं।

हमें सत्संग जरूर जाना चाहिए क्योंकि सत्संग में ही जाकर हमारा अध्यात्म विकास होता है और हम प्रभु प्राप्ति के मार्ग में आगे बढ़ पायेंगे।

बहन अरुणा पाण्डे जी

गुरु जी बताते हैं कि जो सत्संग रूपी गंगा में नहाते हैं उनका मन निर्मल हो जाता है।

“निर्मल मन जन सो मोहि पावा।”

पलपल हमारा जीवन बदलता जा रहा है इसीलिये हमें अपने प्रत्येक पल का सदुपयोग करना है।

(पत्र पीयूष पुरानी सं.-19 नई सं.-21)

साधना को जीवन व्यापी बनाने का यत्न करना चाहिए और प्रभु से सतत् जुड़े रखने का प्रयास करना चाहिए। हम उसकी सौम्यता और समतामई चेतना में निवास कर सकें।

मुनि दुर्लभ हरि भगति नर, पावहि बिन हि प्रयास।
जे यह कथा निरन्तर सुनिहि मानि विश्वास।

हमें भगवान् से प्रार्थना करनी है, हमें नित्य निरन्तर भगवान् से जुड़े रहना है और भगवान् की कृपा को महसूस करना है।

भगवान् शिवजी भी कहते हैं –

बार-बार वर मागहुँ हरषि देउ श्री रंग।

पद सरोज अनपायिनी भक्ति सदा सत्संग॥

हम अपने प्रत्येक कर्म को करते हुए राम नाम से जुड़ने का अभ्यास करें। तुलसीदास जी ने कहा है –

सुनु खगेस हरि भगति बिहाई।

जे सुख चाहहि आन उपाई॥

ते सठ महासिन्धु बिन तरनी।

पैरि पार चाहहि जड़ करनी॥

साधना को जीवन का ध्येय बना लेने से सिद्धि स्वतः हो जाती है।

श्री योगेन्द्र पाण्डेय जी

भगवान् कहते हैं गुरु वही होता है जो गुणातीत होता है, और रूपातीत होता है। जो जैसे विचार वाला होता है – सत, रत अथवा तम, वह व्यक्ति उसी के अनुसार व्यवहार करता है, परन्तु जो गुरु की आज्ञा के अनुसार चलता है, उनकी बतायी गयी साधना के अनुरूप कार्य करता है, वह व्यक्ति गुणातीत होता चला जाता है। गीता के अध्याय 14 में जब अर्जुन ने भगवान् ने गुणातीत के लक्षण जानने चाहे थे तो भगवान् ने उसके उत्तर में 6 श्लोक कहे थे। उन श्लोकों का पद्य में अनुवाद जो श्री दीनानाथ जी ‘दिनेश’ ने अपनी पुस्तक श्री हरि गीता में किया है उनका श्री पाण्डेय जी ने बड़े ही मधुर स्वर में अपनी स्मृति के आधार पर गायन करके सुनाया। इसके पश्चात् उपरोक्त पुस्तक में से ही अध्याय 13 के 7 से 11 तक के श्लोकों का गायन भी अपनी स्मृति के आधार पर गाकर सुनाया, जिनमें भगवान् ने ज्ञान की परिभाषा बतायी गयी है।

इसी सत्र में श्री पाण्डेय जी ने श्री रामचरितमानस के अरण्यकाण्ड के दोहा 13 से 16 तक की सभी चौपाइयों का गायन करके सुनाया जिनमें भगवान् राम ने अति संक्षेप में लक्ष्मण जी को गीता का ज्ञान दिया है, और जो 'राम गीता' के नाम से प्रसिद्ध है।

बहन उमा शुक्ला जी

भगवान् ने गीता के बारहवें अध्याय में चार बातें बताई हैं –

1. समर्पण योग
2. अभ्यास योग
3. भगवत् अर्थ कर्म योग
4. निष्काम कर्म योग

मय्येव मन आधत्स्व मयि बुद्धिं निवेशय।

निवसिष्यसि मय्येव अत ऊर्ध्वं न संशयः ॥8/12॥

भगवान् कहते हैं कि हमें अपनी मन बुद्धि और इन्द्रियों का समर्पण करना है सन्त जिसे सर देना कहते हैं।

जब हम किसी कार्य को बार-बार करते हैं तो हमारा अभ्यास बन जाता है।

जब हम किसी कर्म को करें – चाहे वह सात्विक हो, राजसी हो अथवा तामसी कर्म हो भगवान् के लिये ही करें। क्योंकि फल तो भगवान् की इच्छा से मिलता है उदाहरण के लिये एक किसान साल भर अपनी खेती के लिये परिश्रम करता है लेकिन आखिरी समय अधिक वर्षा के कारण सारी खेती बर्बाद हो जाती है। अतः हमें जो भी कर्म करना है भगवान् की प्राप्ति की इच्छा से ही करें और फल आसक्ति से रहित होकर करें।

बारहवें अध्याय के तेहरवें श्लोक में भगवान् ने भक्त के लक्षण बताये हैं –

अद्वेषा सर्वभूतानां मैत्रः करुण एव च।

निर्ममो निरहङ्कारः समदुःखसुखः क्षमी ॥12/13॥

भगवान् का भक्त सभी प्राणियों में द्वेष-भाव से रहित और सभी से मित्रता का भाव होना चाहिए। दुःख और सुख में समान और क्षमावान होता है।

श्री जगत सिंह जी

गुरुदेव भगवान् ने अवरोह पथ की साधना बताई है और इसके लिये दूसरे अध्याय के श्लोक 59 में भगवान् कहते हैं कि विषयों से हम छूट भी जाते हैं लेकिन उसका रस हमारे अन्दर रह जाता है लेकिन जब प्रभु के दर्शन हो जाते हैं तो हमारे अन्दर रस की भी निवृत्ति हो जाती है।

विषया विनिवर्तन्ते निराहारस्य देहिनः।

रसवर्जं रसोऽप्यस्य परं दृष्ट्वा निवर्तते ॥2/59॥

इसके लिये हम अनन्य भक्ति भाव से प्रभु की शरण हो जायें और हमारे और प्रभु के बीच कोई दूसरा ना हो। अनन्य भक्ति प्राप्त करने के लिये तीन बातें बताई जाती हैं –

1. प्रभु कृपा
2. गुरु कृपा
3. नाम का चिन्तन

प्रभु कृपा से सुन्दर शरीर मिला और उसमें सारी शक्तियाँ भी समाई हैं –

विपुल हरि कृपा कर्म योनि मिली जो,

सभी शक्ति साधन सुबुद्धि समाई।

अनन्य भक्ति के लिये गुरु कृपा परम आवश्यक है। हमारे गुरुदेव परम दयालु परम कृपालु हैं, वो सूक्ष्म रूप से हम सभी के साथ हैं और पल-पल हम सभी को प्रभु के मार्ग पर बढ़ाते चले जा रहे हैं।

राम नाम में सभी कुछ समाहित है। भगवान् के नाम से ही भक्ति, मुक्ति, शक्ति सभी कुछ प्राप्त हो जाती हैं क्योंकि इसी में सभी कुछ समाहित है।

नाम जपन प्रभु प्रेम है भक्ति समर्पण खान

बहन कांति सिंह जी

मत्कर्मकृन्मत्परमो मद्भक्तः सङ्गवर्जितः।

निर्वैरः सर्वभूतेषु यः स मामेति पाण्डव ॥ 11/55 ॥

भगवान् अर्जुन से कहते हैं – हे पाण्डव! जो मेरे लिये ही कर्म करने वाला है, मेरे परायण है और मेरा प्रेमी भक्त है तथा सर्वथा आसक्ति से रहित है और सम्पूर्ण प्राणियों के साथ वैरभाव से रहित हो वह भक्त मुझको ही प्राप्त होता है।

इस श्लोक में भगवान् ने अनन्य भक्ति के पाँच साधन बताये हैं। तीन साधन भगवान् से सम्बन्ध जोड़ने के लिये हैं और दो साधन संसार से सम्बन्ध विच्छेद के लिये हैं।

1. **मत्कर्म** – भगवान् के लिये कर्म करना – हमें अपनी आसक्ति और ममता को त्याग कर सभी कर्म भगवान् की प्रसन्नता के लिये और भगवान् की प्राप्ति के लिये ही करने हैं।
2. **मत्परमा** का अर्थ है प्रभु के सभी विधानों में सदा प्रसन्न रहें चाहे वो हमारे अनुकूल हों या प्रतिकूल हों। हमें हर परिस्थिति में भगवान् का मंगलमय विधान देखना है।
3. **मद्भक्तः** – अर्थात् भगवान् का नाम गुण प्रभाव का श्रवण करना, मनन करना, नाम जप करना, उनकी लीलाओं का चिन्तन-मनन करना, निरन्तर भगवान् की याद को बनाये रखना, इससे हम सब भी भगवान् के भक्त बन सकते हैं।
4. **सङ्गवर्जितः** – इसमें भगवान् बता रहे हैं कि हमें सभी के साथ ममता, मोह और आसक्ति का परित्याग करना है।
5. **निर्वैरः सर्वभूतेषु** – किसी के द्वारा विपरीत व्यवहार होने पर भी उस व्यक्ति के प्रति द्वेष भाव ना होना, सम होना, दूसरों को मान देना, सहनशील होना और क्षमावान होना। रामायण में

कहा है –

सबहि मानप्रद आपु अमानी

और पूज्य मथुरा भैया जी ने भी कहा है –

देखूँ सुनूँ गुनूँ निज अवगुन

औरन के गुण हरषि निहार

श्री दीपक दीक्षित जी

पूज्य गुरुदेव कहते हैं – हम सभी जो नाम जप करते हैं, भक्ति करते हैं, साधना करते हैं – उसमें हमारा व्यवहार अगर समुचित नहीं है, दूसरों के प्रति अगर हमारा व्यवहार ठीक नहीं है, तो हमारी साधना अधूरी है।

हमें नाम जप के साथ-साथ भगवान् के गुणों की चर्चा और उसको अपने जीवन में उतारने का प्रयास करना चाहिए।

ग्रहणशीलता जीवन में बहुत आवश्यक है। और जीवन में सामंजस्य बिठाना भी आवश्यक है। वांछित को ग्रहण करना और अवांछित को छोड़ना है। ग्रहस्थ में हम तरह-तरह के पाठ पढ़ते हैं जैसे सुख-दुःख, मान-अपमान, लाभ-हानि आदि।

हमें समाज में रहते हुए सभी तरह के पाठों को पढ़ते हुए राम नाम से जुड़कर अपने जीवन को कृतार्थ करना है। और अपने व्यवहार का हर पल निरीक्षण करते रहना है।

बहन कमला सिंह जी

महाराज जी ने हम सभी भाई बहनों को बहुत ही सरल साधना दी है। लेकिन इसके लिये विश्वास बहुत आवश्यक है। विश्वास ही हमारे अध्यात्म की नींव है।
बिनु बिस्वास भगति नहीं तेहि बिनु द्रवहिं न राम।
राम कृपा बिनु सपनेहुँ जीव न लह बिसराम ॥

1. प्रभु की सत्ता पर विश्वास
2. प्रभु की कृपा पर विश्वास

3. अपने पर विश्वास

पूज्य भैया जी ने लिखा है –

निज प्रयास प्रभु पग-पग बढ़ाये

प्रभु ने पग-पग हम सभी को आगे बढ़ाया है। भगवान् को हमें कहीं बाहर ढूँढने जाने की आवश्यकता नहीं है प्रभु तो हम सभी के अन्दर हैं।

हमारे जीवन में अनुकूलता, प्रतिकूलता सभी कुछ आती रहती है। इसलिये अगर अनुकूलता आती है तो प्रभुकृपा समझ कर प्रभु का धन्यवाद करें और यदि प्रतिकूलता आती है तो उसमें भी हमें भगवान् का मंगलमय विधान समझकर उसे सहज में ही स्वीकार करने का प्रयास करें।

आगे महाराज जी कहते हैं जो बड़े-बड़े ऋषि मुनि हुए हैं वो परमात्मा की विशेष उत्पत्ति नहीं थे इसलिये हमें भी पूरा प्रयास करना चाहिए हमें भगवान् पर पूरा दृढ़ विश्वास करते हुए साधना के मार्ग में आगे बढ़ते चले जाना है और अध्यात्म के मार्ग में हमारा विकास भी अवश्य होगा।

बहन सुशीला जायसवाल जी

जो भी कार्य हो रहा है वो महाराज जी की सूक्ष्म अध्यक्षता में हो रहा है।

देवद्विजगुरुप्राज्ञपूजनं शौचमार्जवम्।

ब्रह्मचर्यमहिंसा च शारीरं तप उच्यते ॥17/14॥

इस श्लोक में भगवान् ने शरीर के तप के बारे में बताया है। भगवान् ने कहा है – देवता, ब्राह्मण और गुरु का हमें आदर करना चाहिए और पूजन करना है।

हमारे धर्मशास्त्रों में पंच पूजन का विधान है लेकिन हमें पूजन तो सभी का करना चाहिए। परन्तु भाव हमारा सभी में एक परमात्मा का ही होना चाहिए।

ब्राह्मण का अर्थ जिसमें ब्रह्म का गुण हो वही ब्राह्मण है जिसमें अहिंसा, सत्य, तप और धर्मशास्त्रों के अनुकूल व्यवहार हो।

जिससे हम कुछ सीखते हैं वही हमारे गुरु हैं प्रथम गुरु हमारे माता-पिता हैं।

दूसरे जो हमारे अध्यापक हैं वो हमको शिक्षित करते हैं और योग्य नागरिक बनाते हैं।

जो हमारे आध्यात्मिक गुरु हैं उनकी आज्ञा का हमें पूरी तरह से पालन करना है और अध्यात्म में आगे बढ़ना है।

फिर है **प्राज्ञ** – जिसमें न तो हमारा सांसारिक रिश्ता है और न ही उसमें वो जाति में बड़े हैं, लेकिन भगवान् के मार्ग पर चल रहे हैं उनका भी हमको पूरा सम्मान करना है।

ब्रह्मचर्य – अपनी सभी इन्द्रियों को संयमित करना ही ब्रह्मचर्य है। हमें अपनी ज्ञानेन्द्रियों को और कर्मेन्द्रियों को संयम में रखने का प्रयास करना चाहिए।

हमें ध्यान रखना है – हमें कैसे बोलना है, क्या देखना है, क्या सुनना है, कैसे दूसरों के प्रति व्यवहार करना है, इसका हमें ध्यान रखना है।

शौच – अर्थात् शुचिता मन की शुद्धता और तन की शुद्धता मन को शुद्ध करने के लिये हमारे अच्छे-अच्छे विचारों से मन शुद्ध होता है। तन को तो हम सभी स्वच्छ करते ही हैं।

आर्जवम – हमारे जीवन में सरलता होनी चाहिए। अकड़पन नहीं होना चाहिए। नाम जप के प्रभाव से हमारे अन्दर सरलता आती चली जाती है।

अहिंसा – शरीर से, मन से, वाणी से किसी भी प्रकार किसी को कष्ट न देना ही अहिंसा है।

शरीर से सभी की सेवा हो, मन से सभी के लिये अच्छा सोचें, वाणी से प्रिय और हित कर बोलें।



बीसलपुर साधना शिविर-2024

परमपिता परमेश्वर एवं श्री गुरुदेव महाराज की असीम अनुकम्पा एवं सूक्ष्म अध्यक्षता में श्री अग्रवाल सभा भवन बीसलपुर में साधना शिविर का आयोजन दिनांक 13 नवम्बर सायं 03 बजे से 16 नवम्बर 2025 तक शिविर संचालक श्री विष्णु कुमार गोयल एवं श्रीमती कमला वर्मा के संयोजकत्व में शिविर प्रारम्भ हुआ। शिविर में कानपुर, फर्रूखाबाद आदि स्थानों से पधारे 75 तथा स्थानीय 120 साधकों ने इस प्रकार कुल 195 साधकों ने प्रत्यक्ष उपस्थित

होकर स्वयं में आध्यात्मिकता का पल्लवन किया। साथ ही 20 अन्य बन्धुओं ने शिविर में सेवा देकर सहयोग प्रदान किया।

साधना शिविर की दिनचर्या प्रातः जागरणोपरान्त सामूहिक ध्यान साधना, आरती, भ्रमण, योगा, गीता एवं व्यावहारिक प्रवचन, स्वाध्याय, मौन एवं संकीर्तन साधना के प्रमुख सोपान रहे। सभी साधक नियमित दिनचर्या का पालन करते हुए पूज्य गुरुदेव भगवान् की कृपा प्राप्त कर स्वकृपार्थ संकल्पित हुए।

प्रवचन शार

श्री योगेन्द्र पाण्डेय जी

सर्वप्रथम श्री पाण्डेय जी ने अपने कानपुर शिविर के प्रवचन की पुनरावृत्ति करते हुए श्री हरि गीता से गुणातीत के लक्षण बताये। तत्पश्चात् गीता अध्याय 13 में बताये गये ज्ञानी के लक्षण गायन करके सुनाये। पुनः श्री रामचरितमानस से श्री राम गीता सुनायी। फिर श्री रामचरितमानस से सत्संग की महत्ता का वर्णन किया।

श्री रामचरितमानस के अन्त में गोस्वामी तुलसीदास ने इस ग्रन्थ की महिमा बताते हुए कहा है -

‘जो मनुष्य रघुवंश के भूषण श्री रामजी का यह चरित्र कहते हैं, सुनते हैं और गाते हैं, वे कलियुग के पाप और मन के मल को धोकर बिना ही परिश्रम श्री रामजी के परम धाम को चले जाते हैं। अधिक क्या, जो मनुष्य पाँच-सात चौपाइयों को भी मनोहर जान कर उनको हृदय में धारण कर लेता है, उसके भी पाँच प्रकार की अविद्याओं से उत्पन्न विकारों को श्री रामजी हरण कर लेते हैं। ऐसी आठ चौपाइयों का चयन श्री पाण्डेय जी ने किया है जो नीचे दी जा रही हैं -

भक्त तुलसीदास - सीयराममय सब जग जानी।
करउँ प्रनाम जोरि जुग पानी ॥
श्री नारद जी - जेहि बिधि नाथ होइ हित मोरा।
करहु सो बेगि दास मैं तोरा ॥
लोमश ऋषि - तरहिं न बिनु सेएँ मम स्वामी।
राम नमामि नमामि नमामी ॥
लंकिनी - प्रबिसि नगर कीजे सब काजा।
हृदयँ राखि कोसलपुर राजा ॥
जाम्बवान् - प्रभु कीं कृपा भयउ सबु काजू।
जन्म हमार सुफल भा आजू ॥
सीता जी - दीन दयाल बिरिदु संभारी।
हरहु नाथ मम संकट भारी ॥
अगस्त ऋषि - यह बर मागहुं कृपा निकेता।
बसहु हृदयँ श्री अनुज समेता ॥

अत्रिऋषि -

बिनती करि मुनि नाइ सिरु कह कर जोरि बहोरि।
चरन सरोरुह नाथ जनि कबहुँ तजै मति मोरि ॥

बहन सुमन जायसवाल जी

मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु।

मामेवैष्यसि सत्यं ते प्रतिजाने प्रियोऽसि मे ॥ 18/65 ॥

भगवान् कहते हैं कि हे अर्जुन तू मेरे में मन

को लगा, बुद्धि को लगा, मेरा पूजन कर, जीवन की सभी परिस्थितियों को भगवान् का मंगलमय विधान समझ कर स्वीकार कर।

भगवान् बताते हैं मनुष्य का शरीर केवल भोग विलास के लिये नहीं मिला है। हमें सांसारिक वस्तुओं को भगवान् से जोड़कर स्वीकार करना है।

भगवान् ने चार बातें बताई हैं -

1. पदार्थ
2. क्रिया
3. भाव
4. उद्देश्य

पदार्थ - जो भी पदार्थ है जो भी वस्तु है भगवान् से प्राप्त है उसे भगवान् की सेवा समझ कर स्वीकार करना है।

भगवान् का भक्त बनने के लिये इस श्लोक का बार-बार चिन्तन मनन करना है मैं भगवान् का हूँ और भगवान् ही मेरे हैं इसका निरन्तर मनन करना है।

तेषां सततयुक्तानां भजतां प्रीतिपूर्वकम्।

ददामि बुद्धियोगं तं येन मामुपयान्ति ते ॥10/10॥

भगवान् हमारे माता-पिता हैं और हम सभी उनके बच्चे हैं। नाम के द्वारा हम सभी हर समय भगवान् से जुड़ सकते हैं।

चार प्रकार के जप बताये जाते हैं -

1. वाचिक
2. उपासु
3. मानसिक
4. अजपा

शुरुआत में वाचिक से शुरू करने के पश्चात् धीरे-धीरे समय आने पर मानसिक और फिर अजपा जाप होने लगता है।

हमें अपने सभी कर्मों को समुचित मनोवृत्ति से करना है, हमें सभी कर्मों को भगवत् भाव से करना है, एक भी क्षण वर्षाद नहीं करना है।

स्वास-स्वास में नाम जप वृथा स्वांस मत जाये।

बहन उमा शुक्ला जी

श्री गुरु जी ने पत्र पियूष में साधक की सभी समस्याओं का हल बताया है। कभी-कभी जीवन में सभी सांसारिक सुख होने के बाद हम दुःखी रहते हैं। हमारे दुःखी रहने के अधिकतर ये चार कारण होते हैं -

1. राग
2. द्वेष
3. इच्छा
4. कामना

गुरुदेव भगवान् बताते हैं कि जो हमारे हित में है, हमारी मूलभूत आवश्यकतायें हैं, उन्हें तो महाशक्ति माँ पूरी करती ही है, लेकिन हमारी कामनायें तो अनाप-शनाप होती हैं और अनन्त हैं, इसीलिये हम दुःखी होते हैं।

और जब हम किसी से राग करते हैं, द्वेष करते हैं तो भी हम दुःखी होते हैं। कहते हैं माचिस की तीली पहले स्वयं जलती है और फिर दूसरे को जलाती है। सुख को पाने के लिये भी तीन चीजें आवश्यक हैं -

1. प्रेम
2. सेवा
3. त्याग

प्रेम हमारा सुख का कारण है। जितना ही हम दूसरों से प्रेम करते हैं उतने ही हम भी सुखी होते हैं।

हमें अनासक्त भाव से सभी से पावन प्रेम करना है।

सेवा - सभी की सेवा भगवान् की पूजा और सेवा समझ कर करना है। सेवा के अनेकों रास्ते हैं, छोटे-छोटे कार्य करके भी हम सेवा कर सकते हैं।

त्याग - इस सृष्टि को चलाने के लिये सभी अपने-अपने तरीके से त्याग करते हैं - चाहे वो अध्यापक हो, किसान हो, व्यापारी वर्ग हो या

चिकित्सक हो – सभी अपने-अपने कर्मों से त्याग करते हुए भगवान् की सृष्टि को चलाने में सहयोग करते हैं।

जीवन का प्रत्येक क्षण भगवान् को पाने के लिये प्रयासरत रहना चाहिए। नित्य निरन्तर भगवान् से जुड़े रहना है। जो भी साधन मिलता है उसका सदुपयोग करना है और विकास में आगे बढ़ते चले जाना है।

बहन मीरा दुबे जी

महाराज जी बता रहे हैं सन्त कैसे होते हैं उनके क्या लक्षण होते हैं – सन्त स्वयं तो भगवान् के रास्ते पर चलते हैं, जो उनके बताये हुए मार्ग पर चलते हैं वे भी भगवान् के कृपा पात्र हो जाते हैं।

हमारे जीवन में सुख और दुःख दोनों ही आते हैं लेकिन जो भगवान् से जुड़े रहते हैं, अपने विकारों को दूर करने का प्रयास करते हैं, हर समय जागरूक रहते हैं, भगवान् की वाणी पर विश्वास करते हैं, सत्शास्त्र का पठन-पाठन करते हैं, राम नाम का अधिक से अधिक जाप करते हैं, उनका विकास सुनिश्चित है।

हमें किसी से द्वेष नहीं करना है, अपने अहंकार को नष्ट करना है, सभी से प्रेम पूर्वक व्यवहार करना है।

सभी कार्य भगवान् की आज्ञा के अनुसार करना है तो हम भी प्रभु के समीप होते चले जायेंगे।

हमें 10 बातें बतायी जाती हैं जिनमें हमें लीन नहीं होना है –

जननी जनक बन्धु सुत दारा।
जन धन भुवन सुहृद परिवारा ॥
सब कै ममता ताग बटोरी।
मम पद मनहि बाँध बरि डोरी ॥

भैय्या दीपक दीक्षित जी

गुरुदेव हमारे सूर्य के समान हैं और उनके वचन रूपी किरणों से हम सभी को प्रकाशित करते हैं।

हमारे गुरुदेव ने व्यावहारिक साधना पर बहुत जोर दिया है। उन्होंने बताया है कि यदि व्यावहारिक साधना में बताई हुई बातों को अपने जीवन में नहीं उतारते तो हमारा आध्यात्मिक पक्ष कमजोर ही रहता है।

बिना व्यवहार के व्यवहार सीखा ही नहीं जा सकता है।

हम सभी समाज में रहते हैं, समाज व्यक्तियों से बनता है, इसलिये हमें सर्वप्रथम अपने परिवार में ही सभी से अच्छा व्यवहार करना है, प्रत्येक व्यक्ति के व्यवहार से ही समाज भी अच्छा बनता है।

हमें कहीं माँगना नहीं है, तरह-तरह की परिस्थितियाँ हमें कुछ न कुछ सिखाने आती हैं।

हमें सदैव परिवर्तन के लिये तैयार रहना चाहिए क्योंकि परिवर्तन हमारे विकास में सहायक है।

पाषाण से वनस्पति और पशु-पक्षी से लेकर मनुष्य तक परिवर्तन का ही असर है।

हमारे लिये ग्रहणशीलता का भी बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। जिसकी जितनी अधिक ग्रहणशीलता होगी उतनी ही महाशक्ति माँ की हमारे अन्दर कार्य करने की क्षमता भी बढ़ जायेगी और हम विकास के मार्ग में तेजी से आगे बढ़ पायेंगे।

हमें सभी से पावन प्रेम करना है।

बहन शशि वाजपेयी जी

गीता में भगवान् ने हमारी जीवन की विभिन्न समस्याओं का हल बताया है। गीता भगवान् की बनायी गई मूर्ति है। हमारे महाराज जी ने गीता को साधना का ग्रन्थ बताया है।

हमारे जीवन का परम उद्देश्य सत् चित् आनन्द की प्राप्ति है। महाराज जी की साधना में आगे बढ़ने के लिये महाराज जी की पुस्तकों का भी अध्ययन बहुत आवश्यक है। साधना में आगे बढ़ने के लिये पुकार को तीव्र करने के लिये चार साधन बताये गये हैं –

1. सत्संग
2. अध्ययन
3. मनन
4. प्रार्थना

महाराज जी की साधना सरल, सहज और स्वाभाविक है। हमें सत्संग अवश्य करना चाहिए।

अध्ययन के माध्यम से हम साधना से जुड़ सकते हैं। हमारे गुरु जी ने जो भी मन्त्र दिया है, जो साधन बताये हैं, उसी पर हमें दृढ़ विश्वास होना चाहिए। साधना सम्मिश्रण से हमें बचना चाहिए।

हमारी साधना अध्यात्म और सांसारिकता का अनुपम मेल सिखाती है। हमें गुरु की आज्ञा का पालन करना है। और संसार से भागना नहीं है।

अहंकार से हमें ऊपर उठना है अहंकार किये कराये पर पानी फेर देता है। परन्तु साधना में एक अवस्था में आने तक अभिमान की भी आवश्यकता होती है।

परन्तु धीरे-धीरे साधना में आगे बढ़ने पर हमारे अन्दर ये स्वतः ही कम होते चले जाते हैं।

विनम्रता हमारा आभूषण है, जितना हम नम्र होते चले जाते हैं हमारे अन्दर दैवी गुणों का विकास होता चला जाता है।

प्राप्त भोगों से हमें डरना नहीं उसका सदुपयोग करना है और दूसरों की सेवा भी करनी है।

हमें समाज और परिवार में रहते हुए अपने जीवन के लक्ष्य को याद रखना चाहिए। त्याग की दृष्टि से किया हुआ सम्पूर्ण कर्म हमारा यज्ञ हो जाता है।

हमारा भोजन भी साधना के उपयुक्त होना चाहिए। गीता के सत्रहवें अध्याय में भगवान् ने इसका वर्णन किया है। हमें विश्वास के साथ दृढ़ता के साथ अपनी साधना में आगे बढ़ना है।

बहन मुखलेश जायसवाल जी

गुरु जी कहते हैं गीता हमें जीवन जीने की कला सिखाती है।

नाहो यदि मिलन पाके, नर योनि हरि से।
धरा, धाम, सुतलोक, किस काम के ॥

जब अर्जुन को मोह हो गया कि हम अपने सगे सम्बन्धियों को युद्ध में कैसे मारेंगे तो भगवान् ने गीता के माध्यम से हम सभी को भी ये बताया कि करने कराने वाले तो भगवान् हैं हम सभी तो यन्त्र मात्र हैं। जो होता है भगवान् की इच्छा से ही होता है, उन्हीं की आज्ञा से होता है।

तो हमें पूर्ण रूप से भगवान् के प्रति समर्पित हो जाना है, उन्हीं की आज्ञा के अनुसार चलना है, दोनों समय जाप में अवश्य बैठना है।

हम चार प्रकार से भगवान् से जुड़ सकते हैं।

1. **जप** – राम नाम के जप के द्वारा हम भगवान् से जुड़ सकते हैं।
2. **तप** – गृहस्थी में रहते हुए अपने कर्तव्यों को भगवान् की पूजा समझें।
3. **योग** – सभी कर्म चाहे अनुकूल हों या प्रतिकूल प्रभु का प्रसाद समझें।
4. **ज्ञान** – अपनी सारी इन्द्रियाँ भक्ति की ओर लगा दें, हमें मनमानी नहीं करनी है।

बहन कांति सिंह जी

हमारे गुरुदेव भगवान् ने गीता पर विशेष महत्व दिया है। गुरुदेव भगवान् ने बताया है गीता साधना का ग्रन्थ है।

ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्।

मम वर्तमानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः ॥4/11 ॥

भगवान् बताते हैं जो जिस प्रकार से मेरी शरण आते हैं मैं भी उनको उसी प्रकार से स्वीकार करता हूँ।

जो भगवान् की वाणी सुनते हैं, उनका स्मरण करते हैं, उसी के अनुसार अपनी लगन को बढ़ाते हुए भगवान् की कृपा के पात्र बनते हैं।

सभी मनुष्य मेरी ही तरफ बढ़ते हैं परन्तु जिसकी जितनी लगन होती है उतनी ही मेरा कृपा का पात्र

बनता है। हम कितना भी पूजा पाठ कर लें बिना प्रभु कृपा के हम आगे नहीं बढ़ सकते हैं। जो व्यक्ति जिस भाव से भगवान् की ओर बढ़ता है भगवान् भी उसी प्रकार उस पर कृपा करते हैं।

भगवान् की कोई दास्य भाव से उपासना करता है, कोई सारण्य भाव से, कोई पिता-माता के रूप में भगवान् को भजता है।

त्वमेव माता च पिता त्वमेवः

त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेवः

त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेवः

त्वमेव सर्वम् मम देव देवः

कोई वात्सल्य भाव से प्रभु को प्यार करता है। यशोदा माता और कौशल्या माता ने पुत्र के रूप में प्रभु की प्राप्ति की है। मीराबाई ने भगवान् को अपने प्रियतम रूप में प्रभु प्राप्ति की। सात्विक, राजसी और तामसी भाव भी भगवान् के ही हैं।

भगवान् कहते हैं जो अनन्य भाव से मेरी शरण आते हैं, मेरा सतत् स्मरण करते हैं उनको मैं बुद्धि योग दे देता हूँ।

तेषां सततयुक्तानां भजतां प्रीतिपूर्वकम्।

ददामि बुद्धियोगं तं येन मामुपयान्ति ते ॥ 10/10 ॥

जैसे-जैसे साधना में आगे बढ़ते हैं भय से ऊपर उठ जाते हैं।

कोई सकाम कर्म से भगवान् की उपासना करता है और कोई भगवान् की प्राप्ति के लिये भगवान् की शरण आते हैं। लेकिन भगवान् की कृपा सभी पर एक समान होती है।

बहन डॉ. रैना गोयल जी

हमारे गुरु जी ने बताया है कि इस पथ पर आने के लिये सर्वप्रथम हमें अपनी पुकार को पहचानना है इसके लिये – हमारा प्राण, हमारी इन्द्रियाँ, हमारी बुद्धि – जब सभी सुख भोग वस्तुओं के होने पर भी हमें कहीं कुछ कमी लगती है तो ये हमारे अन्दर की पुकार के फलस्वरूप ही होती है। हमारे अन्दर

प्रभु प्राप्ति की तड़प होती है और वो तब तक शान्त नहीं होती जब तक हम प्रभु की प्राप्ति नहीं कर लेते।

पुकार ही तीव्र होने पर अभीप्सा में बदल जाती है। इसके लिये निरन्तर सत्संग अध्ययन, मनन और प्रार्थना के द्वारा हम तीव्र कर सकते हैं।

विश्वास ही इसकी नींव है दृढ़ विश्वास पुकार में आगे जाने के लिये बहुत आवश्यक है।

बहन कमला सिंह जी

**सुत दारा और लक्ष्मी पापिहु के घर होय।
संत मिलन और हरि कथा जग में दुर्लभ होय ॥**

गुरुदेव भगवान् ने बताया है कि पुकार के तीव्र करने के लिये चार बातें प्रमुख रूप से आवश्यक हैं।

1. सत्संग
2. अध्ययन
3. मनन
4. प्रार्थना

हमें जहाँ भी मिले, जितना भी मिले, सत्संग अवश्य करना है। महाराज जी की पुस्तकों का अध्ययन और मनन करना चाहिए और फिर पुकार को तीव्र करने के लिये प्रभु से प्रार्थना करना चाहिए।

हमारी पुकार में स्थिरता होनी चाहिए। स्थान विशेष, समय विशेष, अवसर विशेष पर ही नहीं होना चाहिए। सतत् पुकार बनी रहे आगे चलने पर यही पुकार अभीप्सा में परिवर्तित हो जाती है। अभीप्सा अर्थात् भगवान् को पाने की तीव्र लगन और अन्दर की तड़प होनी चाहिए।

अध्यात्म में आने पर धीरे-धीरे ही विकास होता है। इसके लिये हमें प्रभु पर विश्वास रखना, धैर्य रखना है और चेष्टा करनी है।

अध्यात्म में आगे बढ़ने के लिये प्रभु पर विश्वास, प्रभु की सत्ता पर विश्वास और अपने पर भी विश्वास होना आवश्यक है।

प्रभु की कृपा के लिये हमें धन्यवाद देना है चाहे जीवन में अनुकूलता हो या प्रतिकूलता, सभी को भगवान् का मंगलमय विधान समझना है।

निज विकास के लिये आवश्यक विविध भली अरु बुरी अवस्था

गीता में भी भगवान् ने कहा है जो मुझे अनन्य भाव से भजता है उसका योग क्षेम मैं स्वयं वहन करता हूँ।

सुमिरत सुलभ सुखद सब काहू।

लोक लाहु परलोक निबाहू॥

इसलिये हम सभी को सतत् नाम से जुड़ने का प्रयास करना चाहिए। और हम साधना के मार्ग में आगे बढ़ते चले जायेंगे।

भैय्या अनिल मित्तल जी

भैय्या जी ने बताया है कि हमारे व्यवहार में प्रेम की प्रचुर मात्रा होनी चाहिए साधना में सम्मिश्रण से बचना चाहिए। जो गुरुदेव ने बताया है उसी मार्ग में पूरे दृढ़ विश्वास के साथ चलना है।

पूज्य गुरुदेव और आदरणीय साहू काशीनाथ जी के प्रथम मिलन के बारे में साधकों को अवगत कराया। इसके बाद नीम करौली बाबा और पूज्य गुरुदेव के मधुर मिलन का वर्णन किया।

भैय्या विष्णु जी

गुरुदेव भगवान् ने बताया है कि साधारणतः आध्यात्मिक उन्नति वाले लोग विचित्र होते हैं, एकांगी होते हैं, वे समाज से दूर भागते हैं। कुछ इस प्रकार की धारणा प्रचलित थी।

बाह्य त्याग आध्यात्मिक साधन तथा आध्यात्मिक लाभ का एक आवश्यक अंग माना जाता है। उसमें शारीरिक, मानसिक अथवा सामाजिक विकास पूर्णरूप से नहीं हो सकता।

गुरुदेव भगवान् ने विकास के लिये साधन में

जीवन की गतियों को, परिस्थितियों और जिम्मेदारियों को छोड़ना नहीं परन्तु ठीक रूप से स्वीकार करना आवश्यक बताया है।

समुचित मनोवृत्ति विकास की बाधक नहीं साधक हो जायेगी। विकारों के क्षय के लिये समाज में रहना आवश्यक है। परिशोधन के लिये सामाजिक अनुभूतियाँ और भीतर की साधना दोनों ही आवश्यक हैं।

मन बुद्धि और शरीर सबका उपयोग आवश्यक है। साधना से व्यक्ति महान बनते हैं। वे अपने लिये ही महान नहीं होते उनका जीवन दूसरों के लिये जलती हुई ज्योति के समान शान्ति तथा सुख को देने वाला होता है।

‘एक दीप से जले दूसरा जलते दीप अनेक’

गुरुदेव भगवान् के अनुसार भौतिक समझ के बिना कोई भी सूत्र जीवन में उतारना असम्भव जान पड़ता है। जिस प्रकार किसी पुस्तक के अध्याय को पढ़ते समय किसी एक शब्द का अर्थ अज्ञात होने पर उसे जाने बिना अध्याय पूर्ण नहीं किया जा सकता अर्थात् अधकचरा रह जायेगा और वह विषय हृदयंगम नहीं होगा।

प्रेम क्या है? यह प्रश्न है

वास्तव में इसे जानने के लिये हमें सृष्टि को जानना होगा। जड़, चेतन एवं सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का कार्यक्षेत्र चल रहा है। परन्तु किस शक्ति के द्वारा संचालित है यही ऋत है।

गुरुदेव भगवान् ने कहा है ऋत को हम विशेष दृष्टि से देखें तो विश्व में प्रेम का साम्राज्य दिखता है। अतः प्रेम वह आकर्षण शक्ति है जो एक दूसरे की विरोधनी शक्ति जैसे संहार और सृजन आदि को एक विशाल सूत्र में बाँध देती है तथा संहार और सृजन दोनों में मंगल को, कल्याण को, विकास को उत्पन्न करती है।

विशेष दृष्टि का तात्पर्य यह है जो दृष्टि केवल दुःख देखती है वह भी अधूरी है और जो केवल

सुख देखती है वह भी अधूरी है और जो दोनों को देखती है वह भी अधूरी है फिर पूरी कौन सी है? यह प्रश्न उठता है।

पूरी दृष्टि वह है जो सुख दुःख दोनों को देखे और उन्हें एक मंगलमय नियम से ओतप्रोत देखे। वास्तव में विश्व, ब्रह्माण्ड, समस्त सृष्टि का यह मंगलमय नियम ही ऋत है।

प्रेम आकर्षण शक्ति है इसकी सहज स्वाभाविक क्रिया आनन्द होती है यह भागवत् शक्ति है प्रभु प्रेम स्वरूप है।

वास्तव में मनुष्य का प्रेम अन्तरात्मा का आकर्षण है। इस आकर्षण का प्रभाव हृदय से प्रकट होता है। इसे हृदय ही ग्रहण कर सकता है और आनन्द उल्लास के रूप में होता है। हृदय के उच्च केन्द्रों पर ही इसका अनुभव कर सकते हैं।

महाकवि सूरदास जी ने कहा है –

अविगत गति कछु कहत न आवे।
ज्यों गूंगे मीठे फल को रस अर्न्तगत हीं भावें ॥

जड़ जगत में पराकर्षण शक्ति भी इसी का स्वरूप है समस्त ब्रह्माण्ड सूर्य, चन्द्रमा, तारागण, पृथ्वी सभी पराकर्षण पर निहित तत्व से संचालित हैं।

आसक्ति का क्षेत्र बहुत बड़ा है इसमें प्राण की तृप्ति के साथ-साथ अन्य बहुत सी प्रवृत्तियाँ जैसे

ममत्व, अपना बना लेना, अपना आधिपत्य स्थापित करना आदि मूलभाव हैं ऐसा गुरुदेव भगवान् ने बताया है।

प्रबोधनोपरान्त श्री विष्णु कुमार गोयल ने शिविर में पधारे सभी साधकों, अग्रवाल सभा भवन की कार्यकारिणी तथा शिविर सम्पादन में लगे सभी सहयोगियों का आभार व्यक्त किया। तथा अपेक्षा की कि भविष्य में भी इस प्रकार का सकारात्मक सहयोग मिलता रहेगा।

साधना शिविर की पूर्ति से पूर्व संयोजिका श्रीमती कमला वर्मा ने सभी साधकों की उपस्थिति में श्री विष्णु कुमार गोयल की अनुजा सन्तोष अग्रवाल के आकस्मिक निधन पर शोक व्यक्त करते हुए कहा कि श्रीमती अग्रवाल सामाजिक कार्यकर्त्री के रूप में सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त थीं तथा साधक के रूप में भी उनका अविस्मरणीय योगदान रहा है। हम सब दो मिनट का मौन रखते हुए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि उनकी आत्मा को चिर शान्ति प्रदान करते हुए परिवार को असीम दुःख सहन करने की क्षमता प्रदान करें। मौन के उपरान्त संयोजिका श्रीमती कमला वर्मा ने गुरुदेव का आदेश प्राप्त कर शिविर का जाप दिवगंत आत्मा के प्रति समर्पित कर दिया।

ॐ शान्तिः। ॐ शान्तिः ॥ ॐ शान्तिः ॥

जीवन का कर्तव्य

श्री परमात्मा की इस विचित्र सृष्टि में मनुष्य-शरीर एक अमूल्य एवं विलक्षण वस्तु है। यह उन्नति करने का एक सर्वोत्तम साधन है। इसको प्राप्त करके सर्वोत्तम सिद्धि के लिये सदा सतत चेष्टा करनी चाहिए। इसके लिये सर्वप्रथम आवश्यकता है – ध्येय के निश्चय करने की। जब तक मनुष्य जीवन का कोई ध्येय – उद्देश्य ही नहीं बनाता, तब तक वह वास्तव में मनुष्य कहलाने योग्य ही नहीं; क्योंकि उद्देश्यविहीन जीवन पशु जीवन से भी निकृष्ट है, किन्तु जैसे मनुष्य शरीर सर्वोत्तम है, वैसे इसका उद्देश्य भी सर्वोत्तम ही होना चाहिए। सर्वोत्तम वस्तु है, परमात्मा। इसलिये मानव-जीवन का सर्वोत्तम ध्येय है – परमात्मा की प्राप्ति, जिसके लिये भगवान् श्री कृष्ण ने कहा है –

यं लब्ध्वा चापरं लाभं मन्यते नाधिकं ततः।

– श्रद्धेय स्वामी श्रीरामसुखदासजी महाराज

गुरुदेव ! तेरी ओट

(पुरानी पत्रिका से उद्धृत)

जिधर देखता हूँ उधर तू ही तू है
कि हर शै में जलवा तेरा हूबहू है।
गुलिस्तां में जाकर के हर गुल को देखा
सब तेरी ही रंगत और तेरी ही बू है।

उस हर रंग में, हर रूह में उसी एक राम को
देखने वाली आत्मा ने प्रसाद से भरपूर होकर संसार
को पुकारा – आओ मैं ले चलूँ तुम्हें शिवधाम
में, उस परम मंगलालय में, उस कल्याणमयी के
कल्याणकारी राज्य में जहाँ सदैव प्रसाद बरसता है।

प्रसादे सर्वदुःखानां हानिरस्योपजायते।
प्रसन्नचेतसो ह्याशु बुद्धिपर्यवतिष्ठते ॥

हमारा साधना पथ उसी धाम में पहुँचा देने वाला
एक सोपान है जिस पर दृढ़ता से पाँव बढ़ाता हुआ
व्यक्ति निश्चय ही उस उस परम धाम, परमगति,
परमपुरुष को प्राप्त करता है। इस अनेक में झलकने
वाले एक को अनुभव कर ऐक्य को प्राप्त हो जाता
है। दृढ़ भावना, दृढ़ विचार, दृढ़ प्रीति ही इस साधन
पथ का आधार है और राम नाम ही इसका मंगलसूत्र
है। महाशक्ति स्वरूपा उस की कृपा बरसती धारा
ही सब कुछ करने वाली चंडी-स्वरूपा माँ ही प्यार
से दुलराते हुए हमें स्वच्छ करती हमारे गन्तव्य स्थल
परम धाम में ले जाकर स्वतन्त्र अटल राज्य में स्थापित
कर देने वाली सर्वेसर्वा है।

जैसे एक मानवी माँ बच्चे के प्यार से द्रवित
हुई कीचड़ में लथपथ बच्चे के जरा से रोने से झट
उठाकर गले से लगा लेती है, उसी तरह वह परम
माँ हमारी पुकार को सुन हमें अपनी गोदी में उठा
लेती है। हम समर्पण की भावना से आगे बढ़ते हैं
तो वह अपना लेने को लपक जाती है। हम सब देने

को तैयार होते हैं तो वह सब संभाल लेती है। जब
हम अधीर होकर कहते हैं – माँ! तो वह उत्तर देती
है – आ मेरे बच्चे। वह अमृतमयी अमर कर देती
है हमें। तब बीत जाते हैं हमारे क्लेश; समाप्त हो
जाती यम-यातना और ख़त्म हो जाता है आवागमन
का चक्र। पर यह सब कब होता है? पूज्य गुरुदेव
कहते हैं यह तब होता है जब तू इस अनिर्वचनीय
लीला-चक्र में गिरता-पड़ता हताश हो पुकार उठता
है – अरे राम! तू कहाँ है? भीतर से पुकार उठती
है चेतना। चैन की खोज जब भीतर से शुरू होती
है – तब वह तुम्हें अपनी अहैतुकी कृपा से अपनी
गोदी में ले लेती है।

फिर वही प्रश्न उठता है – क्या है यह सब?
कौन है इसका सूत्रधार? किसलिये है? मैं कौन हूँ,
क्या हूँ? तब मिलता है वह सन्तरूप होकर। कृपा
बरसती है, नाम प्राप्त होता है। तब साधना पथ प्राप्त
होता है। साधना पथ पर यथाशक्ति यथासमय आगे
बढ़ता हुआ साधक चैन पाने लगता है। ज्यों-ज्यों नाम
का स्मरण होता है उसकी याद तीव्र होती जाती है।

गुणानुवाद सुनता है तो उसे पाने की तड़प पैदा
होती है। ज्यों-ज्यों उसे गाता है, स्मरण करता है
त्यो-त्यो आग और भड़क जाती है। उधर वह सन्त
माँ बनकर इसे अपनी गोदी में उठा लेता है। वह
आग भड़क कर एक दिन शोला बन जाती है जो सब
पाप ताप को जलाकर भस्म कर देती है। राख हो
जाता है सब कूड़ा करकट और बीच में से निकल
आता है चमकता हीरा जिसकी चमक से यह सारा
जगत चमकने लग जाता है। फिर वही एक दिन
संसार का पथ प्रदर्शक बन जाता है।

– परम आदरणीय सुमित्रा माँ

चिन्तन

मन का कार्य है चिन्तन करना। प्रतिक्षण मन किसी न किसी बात का चिन्तन करता रहता है। और मनुष्य जैसा चिन्तन करता है, वैसा ही बनता चला जाता है। श्री गीता जी के श्लोक 2/62 में कहा गया है –

ध्यायतो विषयान्पुंसः सङ्गस्तेषूपजायते।

विषयों का चिन्तन करते-करते वह विषयरूप बन जाता है। जैसे भृंगी द्वारा कैद किया गया कीड़ा भृंगी का चिन्तन करते-करते स्वयं भृंगी बन जाता है, इसी प्रकार भगवान् का चिन्तन करते-करते मनुष्य भगवद्रूप बन जाता है। हम जिस प्रकार का चिन्तन करेंगे उसी प्रकार का वातावरण हमारे लिये बनता चला जायेगा। भगवान् में चित्त लगायेंगे तो हमें वैसा ही साहित्य, वैसा ही साधन, वैसा ही संग मिलता जायेगा जिनसे स्वतः ही हमें परमात्मा के मार्ग में अग्रसर होने में सहायता मिलेगी। विषय और विषयी-जगत् से अपने आप ही सम्बन्ध कटता चला जायेगा। भगवान् की ही चर्चा करेंगे तो विषयी पुरुष हम से मिलना-जुलना बन्द कर देंगे, हमारे साथ उठना-बैठना पसन्द नहीं करेंगे और भगवत् चर्चा करने वाले लोग हमारे पास बैठने लगेंगे।

यदि चिन्तन विषयों का करेंगे तो जितने भी धार्मिक कार्य इन्द्रियों के द्वारा करेंगे, वे सब व्यर्थ हो जायेंगे। ऐसे में हमारा मन्दिर में जाना, पूजा करना, दान करना, तीर्थ यात्रा करना, कथा वार्ता करना, सत्संग सुनना, साधु-सेवा करना, स्वाध्याय आदि करना – ये सभी कार्य केवल दिखावा मात्र अथवा ढोंग कहलायेंगे। श्री गीता जी के श्लोक 3/6 में भगवान् ने कहा है –

कर्मेन्द्रियाणि संयम्य य आस्ते मनसा स्मरन्।

इन्द्रियार्थान्विमूढात्मा मिथ्याचारः स उच्यते ॥

अर्थात् जो मूढबुद्धि मनुष्य इन्द्रियों को ऊपर से रोककर मन से उन इन्द्रियों के विषयों का चिन्तन

करता रहता है, वह मिथ्याचारी अर्थात् दंभी कहा जाता है। इसका अर्थ यह हुआ कि क्रिया से अधिक चिन्तन का महत्त्व है। श्री गीता जी के श्लोक 8/6 में यह भी कहा गया है कि –

अन्तकाले च मामेव स्मरन्मुक्त्वा कलेवरम्।

य प्रयाति स मद्भावं याति नात्र संशयः ॥

अर्थात् अन्तकाल में जो पुरुष मेरा स्मरण (चिन्तन) करता हुआ देह त्याग कर जाता है निश्चित रूप से मुझे ही प्राप्त करता है। गीता के अध्याय 8 के श्लोक 13 व 14 में इसी आशय की पुनरावृत्ति की गई है।

एक दृष्टान्त के माध्यम से इस विषय को और स्पष्ट किया जाता है –

काशी नगरी के एक मोहल्ले में एक सन्त रहते थे। उनके घर के ठीक सामने एक वेश्या का घर था। वह वेश्या देखती थी कि सन्त के घर में दिन भर साधु संन्यासी लोगों का आवागमन रहता था। अन्दर से कीर्तन की धुन भी सुनाई देती रहती थी। वेश्या यह सब देख-देख कर पछताती रहती थी कि सन्त कितना भाग्यशाली है और मैं कितनी अभागिन हूँ जो इस घृणित कार्य में रत हूँ। उधर वह सन्त भी वेश्या के घर विलासी लोगों का आना-जाना देखता रहता था और उनके भाग्य को सराहता था क्योंकि विषयों के आकर्षण से वह सन्त पूर्णतः मुक्त नहीं हुआ था। वह सोचता था कि लोग तो विषयों का सुख लूट रहे हैं और मैं इस सुख से वंचित रहता हूँ। एक दिन सन्त और वेश्या दोनों की मृत्यु हो गई। सन्त को लेने के लिये यम के दूत आ गये और वेश्या को लेने के लिये धर्मराज के। जब सन्त ने कहा कि मैं तो दिन भर भगवान् का भजन करता हूँ और वेश्या पाप कर्म में लगी रहती है तो यह विपरीत परिणाम क्यों कर हो रहा है। यमदूतों ने उसको बताया कि मृत्यु के समय तुम विषय-सुख का चिन्तन कर रहे

थे और वेश्या भजन-सुख का। संसार का नियम है कि **अन्त मति सो गति**। उसी नियम के अनुसार आप दोनों को यथेष्ट गति प्राप्त हुई है।

ऐसा इसलिये होता है क्योंकि विषयों में आसक्ति का नाश न होने के कारण ये प्रमथन स्वभाव वाली इन्द्रियाँ यत्न करते हुए बुद्धिमान् पुरुष के मन को बलात् हर लेती हैं। जैसा कि गीता के श्लोक 2/59 और 2/60 में कहा गया है -

विषया विनिवर्तन्ते निराहारस्य देहिनः।

रसवर्जं रसोऽप्यस्य परं दृष्ट्वा निवर्तते ॥

यततो ह्यपि कौन्तेय पुरुषस्य विपश्चितः।

इन्द्रियाणि प्रमाथीनि हरन्ति प्रसभं मनः ॥

श्रीमद्भागवत् में कथा आती है जड़भरत की, जिसमें महान तपस्वी राजा भरत संसार को त्यागकर मोक्ष की प्राप्ति हेतु नदी किनारे कुटिया बनाकर रहते थे किन्तु अंत समय में एक मृगशावक का चिन्तन होने के कारण अगले जन्म में हिरण बनना पड़ा।

विचार करने की बात यह है कि किसी विशेष बात, व्यक्ति या वस्तु का चिन्तन करने का कारण क्या है। या तो चिन्तन होता है उस काम का जो हम अधिकतर समय करते रहते हैं; या हमें किसी का भय सता रहा होता है; या किसी इन्द्रिय का उसके विषय से संयोग हो जाता है; या तीन ऐषणाओं में से किसी ऐषणा से ग्रसित हैं अथवा सांसारिक वस्तुओं या व्यक्तियों में ममता का भाव है। सन्त तुलसीदास जी ने रामचरितमानस में दस वस्तुयें बताई हैं जिनमें साधारणतया व्यक्ति की ममता होती है -

जननी जनक बंधु सुत दारा।

तन धन भवन सुहृद परिवारा।

सब कै ममता ताग बटोरी।

मम पद मनहिं बाँध बरि डोरी ॥

इनमें से जिस व्यक्ति या वस्तु का चिन्तन अन्त समय में होगा उसी के सान्निध्य में अगला जन्म होगा।

द्वेष के कारण भी घृणास्पद का चिन्तन होता है। कंस सदा भय के कारण भगवान् कृष्ण का चिन्तन

करता रहता था जिसके परिणामस्वरूप मरणोपरान्त उसकी आत्मा कृष्ण में ही समा गई। यही शिशुपाल के साथ हुआ। इसी प्रकार रावण की आत्मा भगवान् राम से द्वेष के कारण उन्हीं में समा गई। इससे सिद्ध होता है कि चिन्तन में भाव की प्रधानता नहीं है, विषय या वस्तु मुख्य है।

अब प्रश्न यह है कि इन सब से बचने का उपाय क्या है। श्री गीता जी के श्लोक 6/26 में भगवान् ने कहा है -

यतो यतो निश्चरति मनश्चञ्चलमस्थिरम्।

ततस्ततो नियम्यै तदात्मन्येव वशं नयेत् ॥

अर्थात् जिस-जिस विषय के कारण यह चंचल मन विचलित होता है उस-उस से बार-बार इसे हटाकर ईश्वर की ओर लगायें। जब तक चित्त में ईश्वर प्राप्ति की तड़प जागृत नहीं होती, तब तक कोई भी सांसारिक विषय उसे सहजता से आकर्षित कर लेता है। जिस साधक ने ईश्वर प्राप्ति का दृढ़ निश्चय कर लिया है उसे चाहिए कि विषयों से दूरी बनाकर रखे, अति-आत्मविश्वास से बचे। अपनी कमजोरी को पहचान कर उसके बहकावे में न आये। धीरे-धीरे इस मार्ग पर कदम बढ़ाये, जल्दबाजी से कुछ नहीं होगा। शबरी ने राम की प्रतीक्षा में पूरी उम्र निकाल दी, अन्त में सफलता मिल ही गई। गीता जी के श्लोक 6/25 में कहा गया है -

शनैः शनैरुपरमेद् बुद्ध्या धृतिगृहीतया।

आत्मसंस्थं मनः कृत्वा न किञ्चिदपि चिन्तयेत् ॥

अर्थात् क्रम-क्रम से अभ्यास करता हुआ उपरति को प्राप्त हो तथा धैर्ययुक्त बुद्धि के द्वारा मन को परमात्मा में स्थित करके और कुछ भी चिन्तन न करे।

पूज्य गुरुदेव ने कहा है कि समर्पण ही एकमात्र रास्ता है। हमारे अन्दर इतनी शक्ति नहीं है कि हम इन्द्रियों पर विजय पा सकें। यदि हम समर्पण कर देंगे तो भगवान् स्वयं ही अपनी शक्ति से हमें बचायेंगे।

- रमेश चन्द्र गुप्त 'विनीत'

गुरु की दिव्य ज्योति से जगमगा उठता है शिष्य

गुरु शिष्य के भीतर छिपी असीम सम्भावनाओं के द्वार खोल देता है, जिससे वह अपनी सीमाओं को पार कर अनन्त ब्रह्माण्ड का अंग बन जाता है। हर व्यक्ति के जीवन में गुरु का होना आवश्यक है। जिनके जीवन में गुरु नहीं हैं, उन्हें श्रद्धा भाव से गुरु की खोज करनी चाहिए। जब गुरु मिल जायें, तो नतमस्तक होकर अपना अहंकार उनके चरणों में अर्पित कर देना चाहिए। जैसे बीज मिट्टी में मिलकर वृक्ष बनता है, वैसे ही शिष्य का समर्पण गुरु वचनों के प्रति हो तो उसका जीवन लहलहा उठता है।

जाग्रत गुरु के समीप आते ही शिष्य भी भीतर से वैसे ही जगमगाने लगते हैं, जैसे एक प्रज्वलित दीपक अनेक दीपकों को रोशन कर देता है। गुरु के प्रति समर्पण होते ही शिष्य के भीतर गुरु तत्व, गुरु कृपा, गुरु ऊर्जा, गुरु स्पर्श और गुरु वाणी अपने आप बहने लगते हैं। गुरु के समक्ष जाते समय धन, मान-सम्मान, कुटुम्ब या पद-प्रतिष्ठा का अहंकार नहीं रहना चाहिए, केवल श्रद्धा भाव से नतमस्तक होना चाहिए। जब हम कुछ बनकर गुरु के सामने जाते हैं, तब गुरु कृपा से चूक जाते हैं। गुरु केवल शरीर नहीं, बल्कि एक तत्व है, जो समस्त ब्रह्माण्ड में विद्यमान है। मेरा गुरु या तेरा गुरु शरीर के स्तर पर भिन्न हो सकता है, लेकिन गुरु तत्व एक ही है। गुरु और शिष्य का सम्बन्ध आत्मिक होता है, न कि केवल सांसारिक।

गुरु पूर्णिमा का दिन गुरु से दीक्षा लेने, साधना को मजबूत करने और अपने भीतर गुरु को अनुभव

करने का अवसर है। जैसे प्रकाश के होने से अन्धकार मिट जाता है, वैसे ही गुरु के स्मरण से विकार दूर हो जाते हैं। चित्त के अन्धकार को मिटाने वाले कोई और नहीं, गुरु ही तो होते हैं। वे ही जीवन जीने की कला सिखाते हैं और मुक्ति की राह दिखाते हैं।

कहते हैं, 'हरि रूठे गुरु ठौर है, गुरु रूठे नहिं ठौर', यानी भगवान् रूठ जायें तो गुरु की शरण मिल सकती है, लेकिन गुरु रूठ जायें तो कहीं भी ठौर नहीं मिलता। गुरु ही देव हैं, गुरु ही धर्म हैं और गुरु में निष्ठा ही परम तप है। गुरु से श्रेष्ठ और कुछ नहीं। भगवान् विष्णु के अवतार कृष्ण भी गुरु सान्दीपनि से शिक्षा ग्रहण करते हैं और श्रीराम गुरु वशिष्ठ से ज्ञान प्राप्त करते हैं। सामान्य मनुष्य से लेकर भगवान् तक को गुरु की आवश्यकता होती है।

गुरु पूर्णिमा का महत्व और बढ़ जाता है क्योंकि इसी दिन शिव ने दक्षिणामूर्ति रूप में ब्रह्मा के मानस पुत्रों को वेदज्ञान दिया था। यही दिन वेदव्यास जयन्ती भी है, जिनके सम्मान में इसे 'व्यास पूर्णिमा' भी कहा जाता है।

आषाढ़ पूर्णिमा को गुरु पूर्णिमा कहा जाता है, जिसके बाद वर्षा ऋतु प्रारम्भ होती है। साधक इस दिन से चौमासे के चार महीने एक स्थान पर रहकर साधना करते हैं, जिससे गुरु का दिया गया ज्ञान जीवन में उतर सके। यह समय साधना के लिये सबसे उपयुक्त है। मनुष्य जन्म चेतना की ऊँचाइयों को छूने के लिये मिला है, जो बिना गुरु के सम्भव नहीं।

व्यस्त दुनिया में बच्चों और युवाओं के लिये साधना की शक्ति

आज की दुनिया में, जहाँ हमारे चारों ओर तेजी से चलती सोशल मीडिया, वीडियो गेम्स और स्कूल की पढ़ाई का दबाव है, क्या कभी आपने सोचा है कि इन सब के बीच हम शान्ति और खुशी कैसे पा सकते हैं? हम अक्सर सोचते हैं कि साधना केवल बड़े-बूढ़ों के लिये होती है, या यह बहुत ही मुश्किल काम है। लेकिन, स्वामी रामानन्द की शिक्षाओं के अनुसार, साधना का मतलब सिर्फ पूजा-पाठ करना नहीं है। यह हर पल में भगवान् को याद करना है, और हर काम को दिल से करना है। यह बच्चों और युवाओं के लिये भी उतना ही आवश्यक है जितना कि बड़ों के लिये।

आइये जानते हैं कि हम अपनी रोजमर्रा की ज़िदगी में साधना को कैसे अपना सकते हैं और एक बेहतर इंसान बन सकते हैं।

1. सुबह का तोहफा: दिन की शुरुआत भगवान् के नाम से

क्या आप जानते हैं कि आपका सुबह का पहला विचार आपके पूरे दिन को प्रभावित करता है? सुबह उठते ही, मोबाइल देखने या बिस्तर पर पड़े रहने के बजाय, पाँच मिनट के लिये शान्त बैठें। अपनी आँखें बन्द करें और भगवान् का नाम लें। आप कोई भजन गा सकते हैं या बस चुपचाप अपने गुरु का ध्यान कर सकते हैं। यह छोटा सा अभ्यास आपके मन को शान्त करेगा और आपको पूरे दिन के लिये सकारात्मक ऊर्जा देगा। यह आपके दिन को स्कूल, खेल या किसी भी चुनौती के लिये तैयार करने का सबसे अच्छा तरीका है।



क्या आप आज से ही अपनी साधना शुरू करने के लिये तैयार हैं?

2. पढ़ाई भी एक साधना है

बहुत से बच्चों को पढ़ाई बोझ लगती है। लेकिन क्या आपने कभी सोचा है कि पढ़ाई भी एक तरह की साधना हो सकती है? जब आप किसी विषय को पूरे ध्यान और ईमानदारी से पढ़ते हैं, तो आप ज्ञान के प्रति अपनी श्रद्धा दिखा रहे होते हैं। इसे सिर्फ परीक्षा पास करने का ज़रिया न मानें, बल्कि इसे अपने दिमाग को तेज़ करने और नई चीज़ें सीखने का एक मौका समझें। स्वामी रामानन्द ने सिखाया है कि हर काम को अपनी पूरी लगन से करना चाहिए। इसलिए, जब आप पढ़ते हैं, तो इसे एक प्रार्थना की तरह करें, और आपको परिणाम भी अच्छे मिलेंगे।

3. खेल-कूद और दोस्तों के साथ व्यवहार

खेलना और दोस्तों के साथ मस्ती करना भी बहुत आवश्यक है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि खेल के मैदान में भी हम साधना कर सकते हैं? जब आप खेलते हैं, तो ईमानदारी से खेलें, अपने साथियों के साथ अच्छा व्यवहार करें और हारने पर निराश न हों। खेल हमें टीम वर्क, धैर्य और विनम्रता सिखाते हैं। यही चीज़ें हमारी साधना का भी हिस्सा हैं। दोस्तों के साथ बात करते समय मीठा बोलें और किसी का मज़ाक न उड़ायें। याद रखें, दूसरों के प्रति दयालु होना भी एक बड़ी साधना है।

4. माता-पिता और बड़ों का सम्मान

घर में अपने माता-पिता और बड़ों का सम्मान करना भी आपकी साधना का एक हिस्सा है।

तो, क्या आप आज से ही अपनी साधना शुरू करने के लिये तैयार हैं?

वे आपके गुरु हैं और उनका आशीर्वाद आपको जीवन में आगे बढ़ने में मदद करेगा। उनकी बात ध्यान से सुनें, उनकी मदद करें और हमेशा उनसे प्यार से बात करें। जब आप उनकी सेवा करते हैं, तो आप भगवान् की सेवा कर रहे होते हैं। यह एक ऐसा अभ्यास है जो आपके दिल को शुद्ध करता है और आपको प्रेम और सम्मान देना सिखाता है।

5. डिजिटल दुनिया में सन्तुलन

आजकल हममें से ज़्यादातर का समय स्क्रीन के सामने बीतता है। क्या यह हमारी साधना को रोक सकता है? हाँ, अगर हम इसका सही इस्तेमाल न करें तो। सोशल मीडिया पर घंटों बिताने के बजाय, कुछ समय अपने लिये निकालें। प्रकृति के साथ समय बितायें, किताबें पढ़ें या कोई नया शौक सीखें। जब आप ऑनलाइन होते हैं, तो सकारात्मक बातें साझा करें और दूसरों को प्रेरित करें। अपनी डिजिटल दुनिया को भी अपनी साधना का एक हिस्सा बनायें, जहाँ आप ज्ञान और खुशी फैला सकें।

साधना कोई मुश्किल काम नहीं है, यह एक आसान रास्ता है जो हमें शान्ति और खुशी की ओर ले जाता है। हर दिन छोटे-छोटे प्रयास करें। सुबह उठकर भगवान् का नाम लें, अपनी पढ़ाई और खेल को एक प्रार्थना की तरह करें, और अपने माता-पिता और दोस्तों का सम्मान करें। जब आप ऐसा करेंगे, तो आप महसूस करेंगे कि आपकी ज़िदगी कितनी बदल गई है। आप एक खुश, शान्त और सफल इंसान बनेंगे।

— तोष अग्रवाल, सरिता विहार, नई दिल्ली

11.08.25 से 04.12.25 तक के 2100/- से ऊपर दानदाताओं की सूची

साधकगण अपने दान की राशि बैंक द्वारा निम्नलिखित बैंक खातों में जमा करवा सकते हैं। भुगतान को और सुविधाजनक बनाने हेतु बैंक ऑफ़ इंडिया का QR Code भी दिया जा रहा है।

Swami Ramanand Sadhna Pariwar

BANK OF INDIA,
Haridwar

A/c No.: 721010110003147

I.F.S. Code: BKID0007210



Swami Ramanand Sadhna Pariwar

HDFC BANK,

Bhoopatwala, Saptrishi Chungi, Haridwar

A/c No.: 50100537193693

I.F.S. Code: HDFC0005481

साधना धाम का PAN नम्बर AAKAS8917M है।

जो दानदाता उपरोक्त बैंक खातों में से किसी में भी सीधे जमा करते हैं वे कृपया अपना नाम, पता, आधार कार्ड व PAN CARD का PDF निम्नलिखित नम्बरों में से किसी एक पर अवश्य प्रेषित करें –

1. श्री अनिरुद्ध अग्निहोत्री - 9690187900

2. श्री रवि कान्त भण्डारी - 9872574514

– रवि कान्त भण्डारी, प्रबन्धक, साधना धाम, मोबाइल: 09872574514, 08273494285

1. अनिल चन्द्र मित्तल, बीसलपुर	1,05,000	21. ललित मोहन जोशी, हल्द्वानी	11,000
2. नीति अग्रवाल, हरिद्वार	1,00,000	22. ओम शंकर गुप्ता, कानपुर	11,000
3. रमणिका (एरोप्लेन राइस), फरीदाबाद	1,00,000	23. विशाल चौधरी, दिल्ली	11,000
4. देशराज एंड संस, चण्डीगढ़	51,000	24. सूरज भान सक्सेना, कानपुर	10,500
5. काजल दुसेजा, दिल्ली	51,000	25. सत्य नारायण गुप्ता, बंगलौर	10,100
6. विजय चावला, अनिल चावला, दीपक मेनन, पुनीत अरोड़ा, शशि नागपाल, नई दिल्ली	51,000	26. अजय भल्ला	10,000
7. उषा गुप्ता-आर.सी. गुप्ता, गाजियाबाद	51,000	27. स्वर्गीय विजेन्द्र पाल भण्डारी, अमृतसर	10,000
8. हिमांशु गुप्ता-आर.सी. गुप्ता, गाजियाबाद	50,000	28. विष्णु जायसवाल, मुम्बई	10,000
9. सतीश खोसला, नई दिल्ली	31,000	29. विष्णु अग्रवाल, बरेली	8,201
10. जेनी मेहरोत्रा, गुरुग्राम	25,000	30. सुधीर कान्त अग्रवाल, मेरठ	8,200
11. दिनेश बहल/साहनी नटराजन, गुरुग्राम	22,000	31. लीला गुप्ता, बंगलौर	7,500
12. डॉ. सुनीता, दिल्ली	21,000	32. रेखा गर्ग, दिल्ली	5,350
13. मिलन शर्मा, दिल्ली	21,000	33. अग्यस राम शरण वर्मा, बीसलपुर	5,100
14. नितिन	18,000	34. अंशुल मित्तल/निधि मित्तल, बीसलपुर	5,100
15. हरपाल सिंह राजपूत, हरिद्वार	15,000	35. सी.बी. गुप्ता, नई दिल्ली	5,100
16. रेवा भाम्बरी, नोएडा	15,000	36. गीतांजलि-राजेश अवस्थी, अहमदाबाद	5,100
17. नीता सहगल, नई दिल्ली	12,600	37. हरिओम अग्रवाल, मुरादाबाद	5,100
18. राजेश गुप्ता, फरीदाबाद	12,500	38. कमल कपूर, बरेली	5,100
19. अजय आनन्द, गाजियाबाद	11,000	39. मीना देबास, दिल्ली	5,100
20. अंकुर बंसल, दिल्ली	11,000	40. संजय अग्रवाल, फरीदाबाद	5,100
		41. सीता राम, हरिद्वार	5,100
		42. शिवम अग्रवाल, फरीदाबाद	5,100

(11.08.2025 से 04.12.2025 तक के दानदाताओं की सूची पिछले पृष्ठ से ...)

43. सतेन्द्र	5,001	56. सुनीत मलिक, नोएडा	2,200
44. अरविन्द कुमार मोदी, दिल्ली	5,000	57. अरुणा	2,100
45. कपिल क्वात्रा, दिल्ली	5,000	58. चन्द्र प्रकाश गुप्ता, बरेली	2,100
46. मीना बिजलवान, हरिद्वार	5,000	59. दीपा गर्ग, गाजियाबाद	2,100
47. राजेश गुप्ता (अनुराधा गर्ग), फरीदाबाद	5,000	60. दीपक अग्रवाल, बीसलपुर	2,100
48. सुरेन्द्र पाल सिंह, हरिद्वार	5,000	61. दिनेश अग्रवाल, पीलीभीत	2,100
49. रवि कान्त शुक्ला, देहरादून	4,100	62. डॉ. आकांक्षा अग्रवाल, मेरठ	2,100
50. कमल नारायण मिश्रा, कानपुर	3,500	63. मीना डलास, दिल्ली	2,100
51. हैप्पी चन्देल	3,100	64. प्रतीक दीक्षित, नोएडा	2,100
52. मीना डबराल, दिल्ली	3,100	65. प्रीति अग्रवाल, पीलीभीत	2,100
53. संजय गुप्ता, कानपुर	3,100	66. राधेश्याम खण्डेलवाल, वर्धमान (प.बं.)	2,100
54. सुरेन्द्र-राधा अग्रवाल, बीसलपुर	3,100	67. सुभाष ग्रोवर, दिल्ली	2,100
55. सुबोध गुप्ता, बरेली	2,501	68. गुप्तदान	3,17,500

भीड़ में भी मन को शान्त रखने वाला सच्चा तपस्वी

(श्री श्री आनन्दमूर्ति)

अक्सर हम सोचते हैं कि तपस्या या साधना केवल हिमालय की गुफाओं में, संसार से दूर रहकर ही की जा सकती है लेकिन सच्ची तपस्या किसी स्थान पर निर्भर नहीं करती, वह तो मन की अवस्था है। जिस क्षण मन संयमित हो जाता है, वहीं से साधना आरम्भ होती है।

जीवन में हर व्यक्ति के सामने दो मार्ग आते हैं – श्रेय और प्रेय। प्रेय वह है, जो अभी सुख देता है, लेकिन आगे चलकर दुःख या बन्धन का कारण बनता है। जैसे – इन्द्रियों की इच्छायें, आलस्य या झूठे सुख अपनी तरफ खींचते हैं और हम कमजोर पड़ने लगते हैं। श्रेय वह मार्ग है जो शुरू में कठिन लगता है, पर आत्मा को ऊँचा उठाता है। संयम, सत्य, कर्तव्य और आत्म नियन्त्रण श्रेय के मार्ग हैं। श्रेय वह है जो दीर्घकाल में सही हो, जैसे ईमानदारी से पढ़ाई या मेहनत से करियर बनाना, जबकि प्रेय वह है। जो तुरन्त सुख दे, जैसे मनोरंजन या आराम। दोनों का सन्तुलन आवश्यक है। विद्यार्थी परीक्षा के समय लगातार मोबाइल चलाने में समय गंवाता है, तो वह तात्कालिक सुख (प्रेय) के

कारण अपने स्थायी हित (श्रेय) को खो देता है।

हिमालय की ठण्डी चोटियों पर जाकर साधना करना सरल हो सकता है, लेकिन असली साधना तो संसार के बीच रहकर भी मन को शान्त और पवित्र रखना है। जो व्यक्ति भीड़ में रहकर भी भीतर से एकाग्र है, वही है सच्चा तपस्वी। तपस्या का अर्थ है – अपनी इन्द्रियों को नियन्त्रण में रखना। आँख वही देखे जो पवित्र है, वाणी वही बोले जो हितकारी है और मन वही सोचे जो शुभ है। इस सन्तुलन से घर ही आश्रम बन जाता है और मनुष्य स्वयं साधु।

सच्चा साधु वह नहीं जो वस्त्र बदल ले, बल्कि वह है जो विचारों को बदल ले। जो अपने भीतर की अशुद्धियों से लड़े, वही तपस्वी है। इसलिये तपस्या के लिये हिमालय जाने की आवश्यकता नहीं, हिमालय तो मन में बसाना है, जहाँ विचार निर्मल हों और आत्मा शान्त।

वहीं से आरम्भ होती है वह यात्रा, जो हमें परमात्मा के साक्षात्कार तक ले जाती है।

प्रस्तुति – दिव्यचेतनानन्द अवधूत

शोक समाचार

समस्त साधना परिवार को अत्यन्त दुःख के साथ सूचित करना पड़ रहा है कि इस तिमाही में निम्नलिखित साधक/साधिकाओं ने अपनी नश्वर देह को त्यागकर गुरुधाम में प्रस्थान किया – साधक भाई श्री राम वर्मा का 73 वर्ष की आयु में दिनांक 26 सितम्बर 2025 को लखनऊ में स्वर्गवास हो गया है। उनके पिता श्री रमेश वर्मा पूज्य गुरुदेव के शिष्य थे। पूज्य गुरुदेव से विनती है कि उन्हें अपने चरण कमलों में स्थान प्रदान करें तथा घर वालों को इस महान दुःख को सहने की शक्ति और धैर्य प्रदान करें। ओम शान्ति!



कानपुर में लाल बंगला निवासी अति निष्ठावान वरिष्ठ साधिका श्रीमती चंदा जायसवाल का दिनांक 9 अक्तूबर 2025 को देहावसान हो गया है। पूज्य गुरुदेव से विनती है कि उन्हें अपने चरण कमलों में स्थान प्रदान करें तथा घर वालों को इस महान दुःख को सहने की शक्ति और धैर्य प्रदान करें। ओम शान्ति!



अमृतसर निवासी अति निष्ठावान वरिष्ठ साधक प्रोफेसर विजेन्द्र पाल भण्डारी का दिनांक 11 अक्तूबर 2025 को देहावसान हो गया है। पूज्य गुरुदेव से विनती है कि उन्हें अपने चरण कमलों में स्थान प्रदान करें तथा घर वालों को इस महान दुःख को सहने की शक्ति और धैर्य प्रदान करें। ओम शान्ति!



श्री विष्णु कुमार जी गोयल की छोटी बहन सन्तोष अग्रवाल कोटद्वार का दिनांक 8 नवम्बर 2025 को अकस्मात हृदयाघात के कारण परलोक गमन हो गया है। पूज्य गुरुदेव से विनती है कि दिवंगत आत्मा को अपने चरण कमलों में स्थान प्रदान करें तथा घर वालों को इस महान दुःख को सहने की शक्ति और धैर्य प्रदान करें। ओम शान्ति!



प्रेम वहीं होता है, जहाँ अपने सुख और स्वार्थ की गन्ध भी नहीं होती।



‘फिर करेंगे’ – यह महान् पतन करने वाली बात है। ऐसे स्वभाव वाले व्यक्ति का कल्याण होना कठिन है।



साधक का काम शासन करना नहीं है, प्रत्युत तत्त्वज्ञ और हितैषी के शासन में रहना है।

– श्रद्धेय स्वामी श्रीरामसुखदासजी महाराज

श्री स्वामी रामानन्द जी साधना साहित्य

1. अध्यात्म विकास
2. आध्यात्मिक साधना (प्रथम खण्ड)
3. आध्यात्मिक साधना (द्वितीय खण्ड)
4. Evolutionary Outlook on Life
5. Evolutionary Spiritualism
6. जीवन-रहस्य तथा उत्पादिनी शक्ति
7. गीता विमर्श
8. व्यावहारिक साधना
9. कैलाश-दर्शन
10. गीतोपनिषद
11. हमारी साधना
12. हमारी उपासना
13. साधना और व्यवहार
14. अशान्ति में
15. मेरे विचार
16. As I Understand
17. My Pilgrimage to Kailash
18. Sex and Spirituality
19. Our Worship
20. Our Spiritual Sadhana Part-I
21. Our Spiritual Sadhana Part-II
22. स्वामी रामानन्द – एक आध्यात्मिक यात्रा
23. पत्र-पीयूष
24. स्वामी रामानन्द-चरित सुधा
25. स्वामी रामानन्द-वचनामृत
26. मेरी दक्षिण भारत-यात्रा
27. पत्तियाँ और फूल
28. दैनिक आवाहन विधि
29. Letters to Seekers
30. आत्मा की ओर
31. जीवन विकास – एक दृष्टि
32. विकासात्मक अध्यात्म
33. गुरु के प्रति निष्ठा
34. माँ की विभूति – भक्ति रस (भाग 1 से 5)
35. श्रीराम भजन माला
36. माँ का भाव भरा प्रसाद गुरु का दिव्य प्रसाद
37. पत्र-पीयूष सार
38. गीता पाठ
39. गृहस्थ और साधना
40. प्रभु दर्शन
41. प्रभु प्रसाद मिले तो
42. गीता प्रवेशिका – हिन्दी, संस्कृत व अंग्रेजी में गीता का संग्रहीत संस्करण
43. अध्यात्म विषयक लेख
44. वन्दना, स्तुति, प्रार्थना तथा वैदिक सामान्य ज्ञान
45. Gita Vimarsh

इन पुस्तकों में श्री स्वामी जी ने अपनी विकासवादी नवीनतम साधना पद्धति का विस्तार से वर्णन किया है।

काम शक्ति तथा अध्यात्म विषय पर स्वामी जी द्वारा विशद् व्याख्या श्रीमद्भगवद्गीता के अध्याय 1-7 की स्वामी जी द्वारा विशद् व्याख्या पूज्य स्वामी जी द्वारा लिखित तीन लेखों – (1) साधकों के लिये, (2) दम्पति के लिये, (3) माता-पिता के प्रति का संकलन पूज्य स्वामी जी ने कुछ साधकों के साथ कैलाश-पर्वत की यात्रा व परिक्रमा की थी। उस यात्रा एवं उनकी आत्मानुभूति का विशद् वर्णन श्रीमद्भगवद्गीता के अध्याय 8-18 की स्वर्गीय श्री के.सी. नैयर जी द्वारा व्याख्या

श्री पुरुषोत्तम भटनागर द्वारा सम्पादित

जीवन-रहस्य
हमारी साधना
आध्यात्मिक साधना (प्रथम खण्ड)
आध्यात्मिक साधना (द्वितीय खण्ड)
स्वस्पष्ट प्रो. डा. लक्ष्मी सक्सेना
कु. शीला गौहरी द्वारा साधकों के नाम स्वामी जी के पत्रों का संकलन
स्व. डा. कविराज नरेन्द्र कुमार एवं वैद्य श्री सत्यदेव
श्री जगदीश प्रसाद द्विवेदी द्वारा गुरुदेव की पुस्तकों से संकलन
पूज्य सुमित्रा माँ जी द्वारा दक्षिण भारत यात्रा का रोचक वर्णन
भजन, पद, कीर्तन, आरती आदि का संकलन
स्वामी जी की साधना प्रणाली पर आधारित – श्रीमती महेश प्रकाश
कु. शीला गौहरी एवं श्री विजय भण्डारी द्वारा साधकों के नाम
स्वामी जी के अंग्रेजी पत्रों का संकलन

(प्रो. डा. लक्ष्मी सक्सेना द्वारा अंग्रेजी में अनुवादित पुस्तकें)

Evolutionary Outlook on Life का हिन्दी अनुवाद
Evolutionary Spiritualism का हिन्दी अनुवाद
तेजेन्द्र प्रताप सिंह
अनाम साधिका
श्री सूर्यप्रसाद शुक्ल 'राम सरन'
मीरा गुप्ता
पत्र-पीयूष का संग्रहीत संस्करण

रमेश चन्द्र गुप्त 'विनीत'

श्री कृष्ण गोयल द्वारा गीता विमर्श का English Translation

दिसम्बर 2025 में साधना-धाम में होने वाले कार्यक्रम माँ सुमित्रा जी का निर्वाण दिवस व जन्म दिवस

6 दिसम्बर 2025 को प्रातः 10 बजे रामायण-पाठ प्रारम्भ होगा।

7 दिसम्बर 2025 को माँ सुमित्रा जी का निर्वाण दिवस है, अतः प्रातः जाप के पश्चात् गंगा के पावन तट पर माँ जी को श्रद्धांजलि अर्पित की जायेगी। प्रातः 10 बजे रामायण-पाठ की पूर्ति होगी। दोपहर 12 बजे भण्डारा होगा जिसमें ब्राह्मणियों को भोजन कराकर दक्षिणा दी जायेगी। तत्पश्चात् प्रीतिभोज होगा।

8 से 14 दिसम्बर 2025 तक प्रतिदिन अखण्ड जाप होगा।

14 दिसम्बर 2025 को माँ सुमित्रा जी का जन्म दिवस मनाया जायेगा एवं प्रसाद वितरण होगा।

पूज्य गुरुदेव स्वामी रामानन्द जी का जन्म दिवस साधना शिविर

14 दिसम्बर 2025 को प्रातः 9 बजे से रामायण-पाठ प्रारम्भ होगा।

15 दिसम्बर 2025 को अपराह्न रामायण-पाठ की पूर्ति होगी। सायं 6 बजे अखण्ड जाप प्रारम्भ होगा।

16 दिसम्बर 2025, मंगलवार

सामूहिक जाप	प्रातः 05.30 बजे
हवन	प्रातः 09.00 बजे
ब्रह्मभोज	मध्याह्न 12.00 बजे
प्रकटोत्सव	अपराह्न 02.00 से 04.00 बजे
भजन सन्ध्या	सायं 06.00 से रात्रि 09.00 बजे
प्रीतिभोज	रात्रि 09.00 बजे

17 दिसम्बर 2025, बुधवार

सामूहिक जाप	प्रातः 05.30 बजे
स्वामी जी के संस्मरण एवं अनुभूतियाँ	प्रातः 09.30 बजे

18 से 21 दिसम्बर 2025 - तीन रात्रि का जन्म दिवस साधना शिविर।

साधना परिवार की कार्यकारिणी की बैठक 17 दिसम्बर 2025 को साधना-धाम के कार्यालय में होगी। एजेण्डा उसी समय प्रस्तुत किया जायेगा।

नववर्ष का स्वागत कार्यक्रम

31 दिसम्बर 2025 रात्रि 12 बजे विशेष कार्यक्रम में नववर्ष का स्वागत एवं पूज्य गुरुदेव का आशीर्वाद प्राप्त किया जायेगा। कृपया इस कार्यक्रम में भाग लेकर आने वाले नव वर्ष के लिये शुभाशीर्वाद प्राप्त करें।

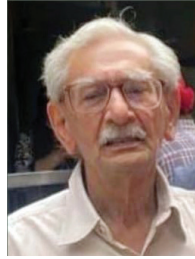


शोक सन्देश



ओ३म् शांति ओ३म्

हे प्रभु हम तुमसे फरियाद करते हैं
आत्मा खुश रखना उनकी जिन्हें हम याद करते हैं



08.12.1937 – 11.10.2025

**कबीरा जब हम आये जगत में, जग हंसा हम रोये
ऐसी करनी कर चले, हम हंसे जग रोये**

प्रोफेसर विजेन्द्र पाल भण्डारी जी उच्च पवित्र दिवंगत आत्मा की शोक सभा में हम एकत्रित हुए हैं लेकिन हमें ऐसा महसूस हो रहा है की वो अभी भी हमारे बीच में मौजूद हैं। दर्द के इस आलम में दिल रोता है, साथ बिताये पल याद करके दिल तनहा होता है, साधना परिवार जिनका मन्दिर था, स्नेह जिनकी शक्ति थी, परिश्रम जिनका कर्तव्य था, परमार्थ जिनकी भक्ति थी, ऐसी महान आत्मा को ईश्वर शान्ति प्रदान करे। हमारे लिये कोई अलविदा नहीं है आप जहाँ भी हो, आप हमेशा हमारे दिल में रहेंगे।

किश्तियाँ डूब जाती हैं, तूफान भी थम जाते हैं।

याद रह जाती हैं उनकी, जब इंसान चले जाते हैं ॥

बृहद् साधना परिवार प्रोफेसर विजेन्द्र पाल भण्डारी जी को अश्रुपूर्ण श्रद्धांजलि देता है तथा भण्डारी परिवार के प्रति अपनी गहरी संवेदना व्यक्त करता है। पूज्य गुरुदेव दिवंगत आत्मा को अपने चरण कमलों में स्थान प्रदान करें। पूरा साधना परिवार उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करता है तथा दुःख की इस कठिन घड़ी में भण्डारी परिवार के साथ खड़ा है।

ओ३म् शांति शांति शांति !

समस्त साधक भाई बहन
स्वामी रामानन्द साधना परिवार
कनखल, हरिद्वार

राम राम जी

आओ 16 दिसम्बर 2025 सोमवार को साधना धाम में
पूज्य गुरुदेव स्वामी रामानन्द जी का 108वां प्रकटोत्सव
पर्व सब मिलकर हर्षोल्लास के साथ मनायें ।

हवन
प्रातःकाल
09:00 बजे

ब्रह्मभोज
मध्याह्न
12:00 बजे

प्रकटोत्सव
अपराह्न
02:00 से 04:00 बजे

भजन सन्ध्या
सायं
06:00 से 9:00 बजे



सभी साधकों से प्रार्थना है कि अपने व्यस्त जीवन से दो दिन का
समय निकालकर सपरिवार सम्मिलित होकर इस पर्व का आनन्द
उठायें एवं पूज्य स्वामी जी का आशीर्वाद प्राप्त करें ।